CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतंत्र रचनावली

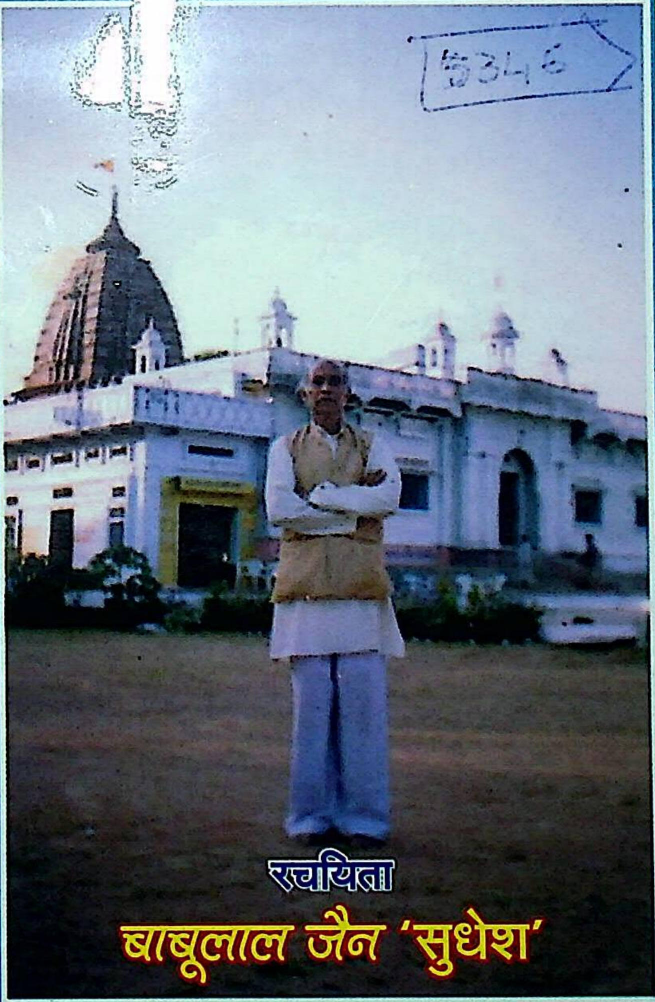

5346

रचयिता

बाबूलाल जैन 'सुधेश'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5346

आदरणीय प्रो० अशोक जी को

सादर भेंट।

Vidyalani

9/7/04

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतंत्र रचनावली

5346

रचयिता
बाबूलाल जैन 'सुधेश'
एम०ए० (हिन्दी) साहित्यरत्न
सेवानिवृत्त शिक्षक
शा० उ० मा० विद्यालय दिगौड़ा, टीकमगढ़, (म० प्र०)

संकलनकर्ता
विवेकानन्द जैन
सहायक ग्रंथालयी
केंद्रीय ग्रंथालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

प्रकाशक
पं० देवीदास जैन शोध एवं अध्ययन केन्द्र
दिगौड़ा, टीकमगढ़ (म०प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुंदेली जैन कवि पं. देवीदास ग्रन्थमाला

प्रकाशक :
पं. देवीदास जैन शोध एवं अध्ययन केन्द्र
दिगौड़ा, टीकमगढ़ (म०प्र०)
© श्री बाबूलाल जैन, दिगौड़ा

प्रकाशन-सहयोगी :
श्रीमती शोभा जैन धर्मपत्नी श्री अनिल चौधरी, ललितपुर
श्रीमती शशि जैन धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जैन, खनियाधाना
श्रीमती सरोज जैन धर्मपत्नी श्री जे.आर.कुमार, ललितपुर
श्रीमती सीता जैन धर्मपत्नी डा. सुनील जैन, टीकमगढ़
श्रीमती सविता जैन धर्मपत्नी श्री श्याम जैन, झाँसी
एवम्
श्री दिगम्बर जैन समाज, काशी,

कवर फोटो : श्री शान्तिनाथ जिनालय, श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, अहारजी

वीर निर्वाण संवत् २५३०
ई. सन् २००४
प्रथम संस्करण, ५०० प्रतियाँ
मूल्यः १०० रूपये मात्र ; सजिल्द : १२० रुपये मात्र

पत्र व्यवहार व पुस्तक प्राप्ति हेतु पता :
श्री बाबूलाल अरविन्द कुमार जैन, दिगौड़ा (टीकमगढ़) मध्यप्रदेश ४७२३३९
फोन: (०७६८१) २६४३८२; email: digodian@yahoo.com

अक्षर संयोजन :
सार्थक कम्प्यूटर्स, सुसुवाही, करमनवीर, बी.एच.यू. वाराणसी
मुद्रक :
महावीर प्रेस,भेलूपुर, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी बात

कभी कभी जीवन में कई ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं, जिस पर मन प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहता है। किन्तु क्या कहें? किससे कहें ? प्रतिक्रिया को समझने वाला भी कोई हो? ऐसी स्थिति में कागज और कलम साथी बन जाते हैं और बन जाती है : कविता/मुक्तक

समय की चलती हुई वयार,हृदय से उठता हुआ ज्वार ।
करे लिपिबद्ध लेखनी नेक, वही कविता होती है एक।।

इसी मन की उपज, प्रतिक्रिया, श्रद्धा, भक्ति, भावना, संवेदना का ही परिणाम आज आपके सामने ''स्वतंत्र रचनावली'' के रूप में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है ।

इस कविता संग्रह में विगत पचास वर्षों का इतिहास, सामाजिक परिस्थितियाँ, जैनदर्शन की गूढ़ता की सरल भाषा में प्रस्तुति, जैन तीर्थ वन्दना, आचार्य स्तुति, बुंदेली भाषा में शिक्षा गीत, महापुरुषों का जीवन-दर्शन, शहीदों को श्रद्धांजलि, देशप्रेम की भावना, सामाजिक कुरीतियों पर प्रतिक्रिया आदि सभी को सम्मिलित किया गया है।

इस पुस्तक का मूल्यांकन कर समीक्षा करने वाले सागर वि.वि. के हिंदी के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. कान्ति कुमार जैन, बनारस के हिंदी कवि श्री राम दुलार सिंह 'पंकज', सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि. के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' एवम् काशी हिंदू वि.वि. के जैन-बौद्ध दर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश कुमार जैन का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अग्रज श्री मोदी दयाचन्द जैन, बहिन प्रभा जी एवं परिवार के सभी सदस्यों को उनकी शुभकामना, प्रेरणा एवं सहयोग के लिए धन्यवाद करता हूँ। साथ ही इस पुस्तक को सुंदर रूप देने एवं प्रकाशन में सहयोगियों का भी मैं आभारी हूँ।

आशा है, आप सभी प्रबुद्ध पाठकों को यह पुस्तक पसन्द आयेगी। पठन-मनन के बाद पाठकगण अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत करायेंगे।

दिगौड़ा (टीकमंगढ़) मध्य प्रदेश — भवदीय
फोन: (०७६८१) २६४३८२ — बाबूलाल जैन 'सुधेश'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवि-परिचय

आजादी से पूर्व टीकमगढ़ रियासत के मबई ग्राम में सन १९३४ में जन्में श्री बृजलाल मोदी के द्वितीय सुपुत्र श्री बाबूलाल जी जैन 'सुधेश' ने मात्र बारह वर्ष की आयु में ही कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े। शिक्षा के लिये अहारजी, टीकमगढ़, सागर गये। आपने सागर वि.वि. से हिंदी से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। आजीविका के लिए सितम्बर १९५३ से आपने शिक्षक के रूप में मबई स्कूल में कार्य करना प्रारंभ किया। कुछ समय बाद दिगौड़ा स्थानान्तरित हो गये। आपने लगभग ४० वर्ष शिक्षण कार्य किया।

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र अहारजी से तो आपको बचपन से ही बड़ा लगाव था, साथ ही आप पर भगवान् शांतिनाथ की विशेष कृपा दृष्टि भी बनी रही। आपने १९५७ में अहारजी में हुए गजरथ महोत्सव में कवि सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें 'आहार के शिल्प व अतिशय' पर कविता पढ़कर सभी का ध्यान आकर्षित किया।

देश की आजादी को आपने करीब से देखा। आप के अन्दर देश-भक्ति की भावना कूटकूट कर भरी हुई है। देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि, शहीदों के परिवारों की व्यथा झण्डा कविता में देखने को मिलती है। आजादी के बाद देश कैसे प्रगति करे? हम सब के कर्तव्य क्या हों? इस पर भी आपकी कलम निरंतर चलती रही।

देश स्वतंत्र हो गया, परन्तु गोवा पर पुर्तगाली शासन था, जो कि आपको सहन नहीं हो रहा था। इसकी झलक १९५७ में आपके द्वारा लिखित कविता "गोवा की स्वतंत्रता" में देखने को मिलती है। इस कविता को देखकर हमें भी बड़ा आश्चर्य हुआ कि टीकमगढ़ जिले के छोटे से मबई ग्राम में रहने वाले व्यक्ति को इतने सुदूर प्रान्त की चिन्ता कैसे व क्यों? यह आपके अन्दर उत्कृष्ट देश-प्रेम व राष्ट्रवाद को दर्शाता है। संयोग से १९६१ में गोवा स्वतंत्र भी हो गया।

ग्रामीण परिवेश, गरीबी, आजादी से पूर्व तथा बाद की सामाजिक परिस्थितियों को आपने करीब से देखा। आप महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू, विनोबा भावे, सन्त तुलसीदास आदि से विशेष प्रभावित थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके द्वारा अतिशय क्षेत्र अहार जी के इतिहास पर लेख प्रकाशित किया गया। नुना-महेवा में अध्यापन के समय सन् १९७५ में "जैतमाता" पर शोध परक लेख जैन मित्र (सूरत) पत्रिका में प्रकाशित हुआ। आपके द्वारा परिवार के सदस्यों पर बनाया मुक्तक सभी को बहुत प्रसंद आया :

"शोभा-शशि सरोज सुनीता,
अरविंद आनंद सत्येन्द्र सविता"

कुम्भकार में "घड़ा", तथा "मूक पशु" आदि रचनाओं में कवि ने निर्जीव तथा सजीव की भावनाओं का जो सुन्दर चित्रण किया है वह कवि की गहरी भावनात्मक सोच को दर्शाता है।

"कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रूदन,
यहाँ पड़े अब हम सब मिट्टी के बर्तन"

जैन धर्म की कविताओं में शांतिसागर से विद्यासागर तक, अहार-पपौरा से मुक्तागिर-शिखर जी तक, समयसार का सार, दान के प्रकार, पंडित टोडरमल जी का बलिदान, महावीर वन्दना, जैन ध्वज गीत, चौबीस तीर्थंकर कीर्तन आदि जैन दर्शन की श्रेष्ठ सरल रचनायें हैं।

अयोध्या में कार सेवा के समय १९९० में लिखित रचना "राम का मन्दिर बन जाने दो" तथा गोस्वामी तुलसी दास जी को श्रद्धांजलि आपके सर्व धर्म समभाव की भावना को प्रगट करते हैं।

राजनीति के स्तर में गिरावट, सामाजिक कुरीतियाँ (दहेज) पर भी आपने पैनी कलम चलायी है। आपकी अधिकांश रचनायें उच्चस्तरीय साहित्यिक है। इनका मूल्यांकन हमारे बस की बात नही हैं।

विषम परिस्थितियों से हार न मानते हुए, संघर्ष में सफलता प्राप्त करके, नि:स्वार्थ भाव से लगातार कार्य करना, आपकी जीवन शैली बन गयी है। बुंदेली जैन कवि पं० देवीदास की स्मृति में दिगौड़ा में बनाये जां रहे "शोध एवं अध्ययन केन्द्र" हेतु आप सतत प्रयत्नशील हैं। यह पुस्तक इसी संस्थान का प्रथम पुष्प है।

आप स्वस्थ, सकुशल, दीर्घायु हों, ऐसी वीर प्रभु से हम सभी कामना करते हैं। आपको हम सभी की ओर से कोटिश: प्रणाम।

अरविन्द - सुनीता जैन
विवेकानन्द - प्रीति जैन
सत्येन्द्र जैन

महावीर जयन्ती
वाराणसी, अप्रैल २००४
फोन: (०५४२) २५७५९९५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्-प्रस्तुति

श्री बाबूलाल जैन 'सुधेश' रचित "स्वतंत्र रचनावली" एक अहिंसा प्रेमी, मानवतावादी और राष्ट्रप्रेमी कवि की कविताओं का संग्रह है। सुधेश जी जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रति अडिग आस्थाभाव रखते है, अत: स्वाभाविक ही है कि उन विषयों पर लिखने के लिये प्रवृत्त हों, जिनका धार्मिक महत्त्व है।

श्री अहार जी, शान्तिसागर जी महाराज, विद्यासागर जी महाराज जैसी रचनाएँ जैन मतावलंबियों को विशेष संतोष प्रदान करेगी, किन्तु साथ ही वह अपने राष्ट्रीय नेताओं को भी नहीं भूलतीं। बापू, संत विनोबा भावे जैसे महापुरुषों को वह जैनादर्शों से प्रेरित फल है उसकी दृष्टि में ये महावीर, बुद्ध के ही प्रतिरूप हैं। अणुव्रत, अहिंसा धर्म आदि सिद्धांतों को हमारे सांस्कृतिक जीवन में जो महत्त्व प्राप्त है उसका कारण जैनधर्म का समावेशी स्वरूप है। अमर शहीद टोडर मल जी के प्रति उसके मन में जैसी श्रद्धा है वैसी ही संत तुलसी दास जी के प्रति भी है।

सुधेश जी सच्चे अर्थों में सांस्कृतिक दृष्टि सम्पन्न कवि हैं। उनकी सभी रचनाएँ छंदोबद्ध हैं। अपनी पद्य प्रतिभा में वे जैन काव्य की परंपरा में उल्लेखनीय स्थान के अधिकारी हैं। उनकी कविताएँ पाठकों में सद्‌गुणों का विकास करेंगी। मुझे आशा है, भविष्य में भी वे ऐसी ही सात्त्विक और सुबोध कविताएँ लिखते रहेंगे।

विद्यापुरम
मकरोनिया कैंप, सागर

मई,२००४

प्रो. कान्ति कुमार जैन
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डा. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतंत्र रचनावली : एक दृष्टि

भाषा का कार्य है भाव और विचार को दूसरे तक पहुँचाना। जितने संक्षेप और प्रभावशाली ढंग से काव्यात्मक भाषा यह कार्य कर लेती है, साहित्य की दूसरी विधायें नहीं कर पाती हैं। इसलिए काव्यात्मक भाषा हमेशा से उत्कृष्ट मानी जाती है। "स्वतंत्र रचनावली" में श्री 'सुधेश' जी का यही सहज प्रयास है जो सराहनीय तथा अनुकरणीय है।

कविता, मन की सहज-रागात्मक अभिव्यक्ति है। कब और कैसे, किस स्थिति में यह मन को झकझोर देगी, कहा नहीं जा सकता। कविता हमेशा से मानवीय चेतना के केन्द्र में रही है। मानवीय चेतना के विकास के साथ-साथ कविता भी चलती रही है, जो कवि श्री सुधेश जी की रचनाधर्मिता में बहुत ही सहजता के साथ समाहित है। इन कविताओं में मानवीय धरातल की बात देखने को मिल रही है। ये कवितायें विविधता के साथ कवि के व्यक्तित्व को सप्रमाण दर्शाती हैं।

स्वतंत्र रचनावली में मानवीय संवेदना, समसामायिकता, राष्ट्रीय चेतना, आध्यात्म, जीवन दर्शन के साथ-साथ बुंदेली क्षेत्रीय भाषा में समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले गीत सम्मिलित हैं। यथार्थ के चित्रण में कहीं भी मायूसी एवं नीरसता दृष्टिगोचर नहीं होती। उनके मन की वेदना, आध्यात्मिक चिन्तन, विचारधारा और उसे समाहित करने का प्रयत्न सर्वथा मौलिक, हृदयस्पर्शी एवं यथार्थवादी है। इन सभी कविताओं को देखने से लगता है कि कवि के जीवन का अध्ययन व्यापक और दृष्टिकोण नैतिक एवं मानवीय है।

संग्रह की भाषा शैली सरल, सुबोध एवं रोचक है जो आधुनिक समाज को आदर्श जीवन का संदेश देने में सक्षम है। सुधी पाठक इस संकलन का स्वागत करेगें, ऐसा मेरा विश्वास है । ईश्वर से मेरा निवेदन है कि वह ऐसे रचनाकार को दीर्घायु प्रदान करे, जिससे वह अपनी रचनाओं के माध्यम से जन-जन के प्रेरणास्त्रोत बनकर आदर्श जीवन के लिये रचनायें प्रदान करते रहें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुत ही आदर और संम्मान के साथ कवि श्री 'सुधेश' जी को अपनी ओर से कुछ पंक्तियाँ समर्पित कर रहा हूँ-

"हिन्दी के साहित्य जगत में,
'स्वतंत्र रचनावली' अनमोल धरोहर।
कलिज काव्य की सजधज अनुपम,
मानहु मनहर मान सरोवर।।
अलंकारयुत शब्द ग्रंथ में,
अगणित 'पंकज' खिले मनोहर।
पात्र बधाई के हैं 'सुधेश' जी,
नव समाज को दिया संजोकर।।"

राम दुलार सिंह 'पंकज'
अरुण निवास
भोगाबीर, लंका,
वाराणसी

मई,२००४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभाशंसा

बुंदेलखण्ड की उर्वरा भूमि 'सिंचाई आदि संसाधनों के अभावों के कारण कृषि के लिए भले ही पूर्ण उर्वरा भूमि न बन पायी हो किन्तु ज्ञान के क्षेत्र में यह भूमि पूर्णतया उर्वरा है। यहाँ की भूमि में जन्म लेने वाले बीसवीं सदी में अनेक विशिष्ट विद्वानों कवियों की लम्बी परम्परा ने विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय मनीषा को महनीय योगदान दिया। इसी बुंदेलखण्ड के हृदयस्थान टीकमगढ़ जिले के समीप स्थित 'दिगौड़ा' नामक ग्राम में २५० वर्ष पूर्व महाकवि देवीदास जैसे एक सुविख्यात लोक कवि हुए, जिन्होंने अपने 'देवीदास विलास' जैसे पुरानी हिन्दी की लोकभाषा के महाकाव्य के माध्यम से अपनी काव्य प्रतिभा से जनमानस को परिचित कराया। इसी दिगौड़ा ग्राम को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले लोकप्रिय शिक्षक एवं प्रतिभाशाली कवि श्री बाबू लाल जी 'सुधेश' की प्रस्तुत 'स्वतंत्र रचनावली' नामक काव्य संग्रह का अध्ययन कर मुझे आश्चर्य मिश्रित आनन्द का अनुभव हुआ।

कवि 'सुधेश जी' ने प्रस्तुत काव्य में विभिन्न अवसरों पर स्वान्तः सुखाय, राष्ट्रभक्ति एवं जिनेन्द्र भक्ति से प्रभावित होकर, सामाजिक जीवन की खट्टी-मीठी विभिन्न अनुभूतियों का अनुभव कर तथा अपनी मातृबोली बुंदेली के प्रति गहरे प्रेम के कारण इसी बोली में जिन कविताओं का समय-समय पर सृजन किया उन्हें 'स्वतंत्र रचनावली' का स्वरूप प्रदान कर प्रकाशित किया जा रहा है। कवि की यत्र-तत्र बिखरी हुई कविताओं को सहेजकर विषयानुरूप विभाजित करके संकलित और संपादित करने का कार्य किया काशी हिन्दू वि.वि. के केन्द्रीय ग्रन्थालय में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्यरत उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री विवेकानन्द जी जैन ने।

जहाँ कवि की अनेक रचनाएँ हृदयस्पर्शी हैं, वहीं अनेक कवितायें कवि के जीवनकाल की अनुभूत सच्चाईयों का दिग्दर्शन कराती हैं। आशा है सुधी पाठक इसका मूल्यांकनकर रचनावली का हृदय से स्वागत करेंगे।

मैं इस काव्य संग्रह के सहृदय कवि श्री 'सुधेश जी' तथा इसको सुन्दर रूप में संपादित करने वाले मेरे मित्र श्री विवेकानन्द जी का अभिनन्दन करता हुआ इनके मंगलमय यशस्वी जीवन की कामना करता हूँ।

डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'
जैन दर्शन विभागाध्यक्ष,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी
एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.दिगम्बर जैन विद्वत परिषद्

वाराणसी
मई,२००४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलकामना

महाकवि पं. देवीदास जी की जन्मभूमि दिगौड़ा को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले श्रीमान् बाबूलाल जी जैन 'सुधेश' मूलतः एक धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ आपने एक आदर्श शिक्षक के रूप में मध्यप्रदेश सरकार को अपनी सेवाएँ दी हैं, वहीं आप प्रारम्भ से ही भावुक और सहृदय कवि हैं। मात्र बारह वर्ष की अल्पावस्था में कवि-जीवन प्रारम्भ कर आज सत्तर वर्ष की अवस्था में भी आप कविकर्म में रत हैं। ऐसे कवि श्री 'सुधेश' जी द्वारा लिखित 'स्वतंत्र रचनावली' का मैंने 'अथ' से 'इति' तक अध्ययन किया है। इसमें 'सुधेश' जी की उन चुनिन्दा कविताओं का संकलन है, जो उन्होंने तत्कालीन देश, काल और समाज की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर लिखी हैं।

ये कविताएँ जिस देश, काल और समाज को ध्याम में रखकर लिखी गईं हैं, यदि उस देश, काल और समाज की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर सहृदय पाठक पढ़ेंगे तो जहाँ वे कविताओं का रसास्वादन कर सकेंगे, वहीं वे तत्कालीन इतिहास की झलक भी पा सकेंगे। अमर शहीद पं. टोडरमल, गोवा की स्वतंत्रता, राजनेता, श्री रामलला का मन्दिर बन जाने दो, प्रौढ़ शिक्षा और पुत्री शिक्षा आदि कविताएँ सहृदय पाठक को झकझोर देने वाली हैं।

कविश्री 'सुधेश' जी के संस्कारपूत सुपुत्र श्री विवेकानन्द जैन, सहायक ग्रन्थालयी, केन्द्रीय ग्रन्थालय, का.हि.वि.वि. ने इन कविताओं का संकलन एवं सम्पादन कर अपनी कुल-परम्परा के गौरव को बढ़ाया है। मैं उनके यशस्वी दीर्घ जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

वाराणसी
११ जून, २००४

डॉ. कमलेशकुमार जैन
रीडर एवं अध्यक्ष
जैन-बौद्धदर्शन विभाग
संस्कृत विद्याधर्मविज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रम

मेरी बात iii
कवि परिचय iv-v
प्राक्-प्रस्तुति (प्रो.कान्ति कुमार जैन) vi
स्वतंत्र रचनावली : एक दृष्टि (श्री रामदुलार सिंह 'पंकज') vii-viii
शुभाशंसा (डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी') ix
मंगलकामना (डॉ. कमलेशकुमार जैन) x

जैनधर्मगीत

श्री अहार जी ३
आचार्य स्तुति (शांति सागर जी) ४
आचार्य वंदना (विद्या सागर जी) ५
नर-तन ६
समयसार का सार ७
इंद्रिय-विषय ८
केश लुंचन ९
चेतन १०
भगवान महावीर स्वामी ११-१२
जैन ध्वज-गीत १३
श्रद्धा-सुमन १४-१५
आत्म कल्याण १६
अणुव्रत पालन १७-१८
पद : प्रभूजी मैं तो शरणा तेरी बसो १९
पपौरा जी २०-२१
अहार जी : प्राचीन शिल्प कला का अनुपम आदर्श २२-२३
मुक्तागिरी जी २४
श्री सम्मेद शिखर जी २५
अमर शहीद पं० टोडरमल जी, जयपुर २६-२८
दान २९
नए वर्ष का स्वागत गान : वीर प्रभु तेरी जय हो ३०
शांतिनाथ स्तुति ३१
शांति-कुंथु-अरहनाथ भजन ३२-३३
कीर्तन चौबीस तीर्थंकर ३४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशभक्ति गीत

बापू जयंती : श्रद्धांजलि	३७
पं० जवाहर लाल नेहरू : शान्तिदूत	३८-३९
संत विनोबा भावे : भूमिदान	४०-४१
शहीद श्रद्धांजलि	४२-४३
राजनेता-१ (तब का नेता)	४४
राजनेता-२ (आज का नेता)	४५-४६
सुख का साम्राज्य बने कैसे?	४७-४८
गोवा की स्वतंत्रता	४९
झण्डा दिवस	५०
स्वतंत्रता दिवस	५१
जागो भारतवासी (चीनी आक्रमण)	५२-५३
बाधक नहीं बनो	५४

सामाजिक गीत

अयोध्या जी (श्री राम का मंदिर बन जाने दो)	५७-५८
श्रद्धांजलि : गोस्वामी तुलसी दास जी	५९
कुण्डलियाँ (तुलसीदास जी)	६०
दहेजी कुण्डलियाँ	६१
कुम्भकार	६२-६३
मूक पशु	६४
शाकाहार	६५
जागो : समय पल पल जा रहा है	६६-६७
पंचायत : राम राज्य	६८-७०
कवि की अभिलाषा	७१
बीते अब तक सत्तर वसन्त	७२
लिपिक	७३-७४

बुंदेली शिक्षा गीत

पढ़ लो (पढ़ लो पढ़ लो सभी नर-नार,)	७७
पुत्री-शिक्षा (अपनी लली पढ़ा लो री)	७८
प्रौढ़-शिक्षा (आओ-आओ रे निरक्षर लोग)	७९
महिला-शिक्षा (गुरु बिन ज्ञान मिलत नइयाँ)	८०
क्या करें, क्या न करे (हिंदी वर्णमाला)	८१-८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदर्श शिक्षकों
और
राष्ट्र निर्माताओं
को
सादर समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनधर्म गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5346

श्री अहार जी

जो आते हैं अहार, शान्ति प्रभु को निहार,
उनको नत बार बार, अपार सुख पाते हैं।
पाणा से सेठ यार, पापट से शिल्पकार,
देख कर चतुराई अति चकित रह जाते हैं।।

कैसी है मूर्ति भव्य, आते हैं मनुज सभ्य,
लेकर के अष्ट द्रव्य चरणों चढ़ाते हैं।
करते हैं अनेक नृत्य, होते हैं भाव सत्य,
शान्ति प्रभु के महत्त्व को गाते जाते हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य स्तुति
परम पूज्य आचार्य १०८
श्री शान्ति सागर जी महाराज

चारित्र चक्रवर्ती
    आचार्य शान्ति सागर।
मुनि मार्ग को जिन्होने,
    फिर से किया उजागर।।

दे देशना सभी को,
    मुनि मार्ग को बताया।
भूले हुए जनों को,
    शिव मार्ग पर लगाया।।

जयवन्त शान्ति सागर,
    आशीष मुझे दीजे।
शिव मार्ग पर चलूँ मैं,
    ऐसी सुबुद्धि कीजे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य वंदना
सन्त शिरोमणि १०८ आचार्य
श्री विद्यासागर जी महाराज

आचार्य विद्या सिन्धु गुरुवर,
परम पूज्य महान हैं ।
श्री क्षमा सागर आदि मुनिजन,
का उन्हीं सम ध्यान है ।।

जो तरण तारण भव निवारण,
ज्ञान गंगा को बहा ।
कर रहे कल्यान निज पर
जाय जो इसमें नहा ।।

उन तत्त्वदर्शी हृदयस्पर्शी,
सन्त का सुमरन करूँ ।
आचरन पावन करन को,
मैं चरन रज सिर पर धरूँ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नर - तन

दु:खों का भण्डार है यह तन,
कर्म बन्ध का है कारण।
आत्मा से है भिन्न किन्तु,
धर्माराधन का है साधन ॥ १ ॥

भवि जन इसका पोषण करते,
धर्माराधन करने को।
मुनि जन इसका शोषण करते,
कर्मों का क्षय करने को ॥ २ ॥

इस तन को हम भार न समझें,
यह हमको उपहार मिला।
धर्माराधन तप करने को,
यह उत्तम आधार मिला ॥ ३ ॥

नर तन पाय करो तप भैया,
देवी - देव तरसते हैं।
तप करने वालों के चरणों,
श्रद्धासुमन बरसते हैं ॥ ४ ॥

अवसर पाय नहीं हम चूकें,
फिर संयोग न आयेगा।
गया समय फिर हाथ न आवे,
पछतावा रह जायेगा ॥ ५ ॥

करो प्रतिज्ञा गुरुवर सम्मुख,
विषय कषायें छोड़ दो।
जीवन में उज्ज्वलता आए,
आज नया कुछ मोड़ दो ॥ ६ ॥

बिनती है 'सुधेश' की सबसे,
धर्माराधन करने को।
जिस पथ गए मुक्ति को मुनिजन,
उस पथ पर पग धरने को ॥ ७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयसार का सार

एक व्यक्ति (जीव)
जाता है वन में।
लकड़ियाँ (अजीव)
बटोरता है। (आश्रव)
बेलों से बाँधता है (बन्ध)
हिंसात्मक कर्म जान,
वहीं छोड़ देता है। (संवर)
मुख मोड़ लेता है
राग-द्वेष मोह त्याग
वस्त्र छोड़ देता है
तपती शिला पर बैठ (निर्जरा)
विषय कषायें त्याग
सिद्ध गुण गाता है
शिव पद पाता है। (मोक्ष)

बुन्देलखण्ड जैन तीर्थ परिचय

पवा, अहार, पपौरा, नाबई, सोनागिर, नैनागिर।
खजुराहो, थूबोन, चंदेरी, देवगढ़ अरु द्रोणागिर।
बंधा, मदनपुर और करगुवाँ, जैन तीर्थ हैं भारी।
तीर्थ क्षेत्र बुंदेलखण्ड के, अनुपम अतिशय धारी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रिय-विषय

अरे मन विषयों से मुख मोड़
प्रभु से नाता जोड़।। अरे मन ..... ।
भीम काय गज मद मस्ती में,
तन की सुध-बुध खोता।
कागज की हथिनी के पीछे,
वह गड्ढे में होता ।।
विवश चल देता तन को छोड़।। अरे मन ..... ।

रसना लोलुप मीन विचारी,
बंशी में फंस जाती।
लघु आटे के लालच में वह,
अपने प्राण गवाँती।।
तड़पती चल देती तन छोड़ ।। अरे मन ..... ।

घ्राणेन्द्रिय के वशीभूत हो,
भ्रमर जलज रस चखता।
निशि-वासर की सुध खोकर के,
उसमें ही बस रहता।।
आय गज ग्रसता उसे मरोड़।। अरे मन ..... ।

लौ लावण्य लपकता लम्पट,
अनल संग स्नेह।
हित-मित की सुध भूल जात ज्यों,
जलत पतंगा देह।।
जिया नैनन के सुख को छोड़। अरे मन ....।

मधुर तान सुन सुध-बुध खोकर,
मृग सहता है बान।
बिल में छिपा सर्प परवस हो
जाता बाहर आन।।
श्रवण कर नहीं लगाना होड़। अरे मन ....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केश लुंचन

निज को निज जाना है मुनि ने,
पर में पर का बोध है।
केशलुंच की क्रिया इन्हें तो,
मुक्तिमार्ग का शोध है।।

(१)

काम क्रोध मद मोह लोभ को,
इनने त्याग दिया ऐसे।
सर्प काँचली छोड़ पुनः वह,
धारण नहिं करता जैसे।
असि प्रहार भी करे कोई पर,
अंश मात्र नहिं क्रोध है।
केशलुंच की क्रिया इन्हें तो,
मुक्तिमार्ग का शोध है।।

(२)

सहन करें मुनि बाइस परीषह,
मूलगुणों को धारण कर।
सदा सत्य ही भाषण करते,
मधुर वचन उच्चारण कर।।
बिना दिये तृण भी नहीं छूते,
नहिं विषाद नहिं मोद है।
केशलुंच की क्रिया इन्हें तो,
मुक्तिमार्ग का शोध है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन

रे चेतन, तन तज शीघ्र निकल।
इस तन से तूँ मोह त्याग दे,
मत हो रंच विकल,
रे चेतन, तन तज शीघ्र निकल।

हाड़ मांस मल मूतर का घर,
कुछ भी नहीं धवल।
जीर्ण शीर्ण हो गया बसेरा,
तज पा जाय नवल।। १ ।। रे चेतन...

विषय-कषायों को झट तज दे,
सींच रत्नत्रय जल।
आतम को शुद्धातम करके,
सिद्धालय को चल ।। २ ।। रे चेतन...

आतम राम राम से मिलने,
हँसता गाता चल।
हँस अकेला ही जाता है,
देर न कर इक पल ।। ३ ।। रे चेतन...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान महावीर स्वामी

अनाचार अन्याय बढ़ रहा था इस जग में।
नहीं कोइ भी चल सकता था सुख से मग में।।
पशु हिंसा ही नहीं यज्ञ में की जाती थी।
मानव की आहुति भी उसमें दी जाती थी।।१।।

अश्वमेध नरमेध यज्ञ का ताण्डव दर्शन।
धर्म आड़ में कर्म काण्ड का महाप्रदर्शन।।
दुर्बल दीन दुखी जन पर दुख बादल छाये।
ऐसे में ही वीर गर्भ त्रिशला के आये।। २।।

त्रिशला के ही नहीं विश्व के तारे बनकर।
जन्में थे महावीर नृपति श्री सिद्धार्थ घर।।
बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर में नालंदा के पास।
कहती विद्यालय की अब भी प्राचीरें इतिहास।। ३।।

राज-पाट कर त्याग दुःख जीवों का हरने।
ब्रह्मचर्य व्रतधार चल दिये तप को करने।।
सत्य अहिंसा का पालन करना सिखलाया।
जीवों को दे अभय धर्म का पथ बतलाया।। ४।।

महावीर शिव गये पुरी पावापुर से।
पाने पद रज मनुज गये दौड़े घर से।।
नालन्दा के छात्र सभी थे दौड़ गये।
पर बिन पग बाली प्राचीरें हम खड़े रहे।। ५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पा न सके पावन पद-रज पावापुर की।
पावस में ज्यों पपिहा प्यास रहे उर की।।
मेरे ही प्रांगण में प्रभु पढ़ने आते थे।
क्रीड़ा करते थे बहु विधि नृत्य रचाते थे।। ६।।

आया मुझको भी ध्यान भूमि है यह पावन।
जिस पर व्यतीत हैं हुए वीर के कई सावन।।
बस यही समझ कर ढके हुए थी सिर अपना।
पावन तो हो ही गई देखती थी सपना।। ७।।

पर तुमने मुझको अर्द्धस्वप्न में जगा दिया।
पावन पद रज को क्यों मुझ पर से उठा लिया।।
यदि चाह रहे बनना पवित्र तो ठीक किया।
तो सुन लो मुझसे महावीर सन्देश दिया।। ८।।

महावीर सन्देश सभी को जियो और जीने दो।
गंगा पावन नीर सभी को पियो और पीने दो।।
दुखियों की दुखहर गुदड़ी को सियो और सीने दो।
श्री जिनवर के चरण कमल तुम छुओ और छूने दो।। ९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन ध्वज-गीत

जय जय जय पचरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

पाँच रंग पाँचों परमेष्टी,
पाँच अणुव्रत की रख दृष्टी।
लखकर सुखी होय सब सृष्टी,
विश्व धर्म का ध्वज यह न्यारा।।
जय जय जय पचरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

लाल रंग श्री सिद्ध प्रभू का,
पीला रंग आचारज जी का।
अर्हन्त श्वेत हरा उवझाया,
नीला रंग साधू का न्यारा।।
जय जय जय पचरंगा प्यारा।।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

सत्य लाल, अस्तेयक पीला
और अपरिग्रह का रंग नीला।
ब्रह्मचर्य का श्वेत निराला
हरा अहिंसा का उजियारा।।
जय जय जय पचरंगा प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धा-सुमन

आओ श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ
वर्द्धमान भगवान को।
ढ़ाई हजार वर्ष बीते हैं
महावीर निर्वाण को।।

हिम-गिरि सा मस्तिष्क मातृ का,
गंगा ब्रह्म हृदय का हार।
नव बसन्त बन्धन काटा था,
त्रिशला जी की कूख मझार।।

षट ऋतु के फल-फूल फल रहे,
रत्नवृष्टि हो रही अपार।
शस्य श्यामला शोभित धरनी,
घर-घर आनंद मंगलाचार।।

चैत्र शुक्ल तेरस को जन्मे,
वर्द्धमान जिन नाम को।
आओ श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ
वर्द्धमान भगवान को।। १।।

शिशु वय में ही वर्द्धमान ने
किये अनेकों अतिशय काम।
संगम अहि का दर्प दमन कर,
पाया महावीर का नाम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अश्वमेध नरमेध यज्ञ का
दिन-दिन बढ़ता हुआ प्रचार।।
महावीर प्रभु देख सके नहिं,
दीनों पर यह अत्याचार।।
राज पाट घर-वार त्याग सब,
चले विश्व के काम को।
आओ श्रद्धा-सुमन चढ़ाएँ,
वर्द्धमान भगवान को।। २।।

बारह वर्ष तपस्या करके,
ज्ञान ज्योति का किया प्रकाश।
सत्य अहिंसा और अपरिग्रह,
का जीवों को दे आभास।
ब्रह्मचर्य अस्तेय आदि का,
सब जीवों को दे उपदेश।
आयु बहत्तर वर्ष विताकर,
मोक्ष महल में किया प्रवेश।।
'जियो और जीने दो' गूँजा,
जीवों के कल्याण को।।३।।

आओ श्रद्धा-सुमन चढ़ाएँ,
महावीर भगवान को।
ढ़ाई हजार वर्ष बीते हैं,
महावीर निर्वाण को।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म-कल्याण

ध्यान लगाओ, ज्ञान बढ़ाओ, करो आत्म कल्याण
कि इससे पाओ पद निर्वाण।

(१)

जीवन तेरा नीर-बबूला,
क्यों फिरता है फूला-फूला।
स्वारथ के सब संगी साथी,
कोई नहीं रहे अनुकूला।।
जाने कब उड़ जाये तन से, चेतन हंस महान,
कि भैया! करो आत्म कल्याण।। ध्यान .....।

(२)

णमोकार को नित प्रति पढ़िये,
जीवन पथ में आगे बढ़िये।
देव अर्चना अरु आराधन,
श्रद्धा-भक्ति सहित ही करिये।
अंजन भी तर गये इसी से, है यह मंत्र महान,
कि भैया! करो आत्म कल्याण।। ध्यान .....।

(३)

राग-द्वेष कामादिक त्यागो,
सत्य अहिंसा में चित पागो।
बिन अधिकार वस्तु नहिं गहिये,
नागिन तृष्णा से भी भागो।।
पंच महाव्रत धारण करिए, जीवन का उत्थान।
कि भैया! करो आत्म कल्याण। ध्यान .....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणुव्रत-पालन

अणुव्रत पालन करो बन्धुओ, सत श्रद्धा के साथ रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर, पाओ मोक्ष निवास रे।।

अहिंसा

नहीं सतायें किसी जीव को,
चाहे कुंजर कीरि हो।
हरें वेदना सब जीवों की,
समझें निज सम पीर हो।।
रहे दया का भाव सदा ही,
तब हम प्रभु के पास रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर,
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन ....।

सत्य

कर्कश वाणी को हम त्यागें,
मीठे वचन सदा बोलें।
मुख से निःसृत होने से पहले,
मन से उन्हें सदा तोलें।।
सदा सत्य का पालन करिये,
नहीं झूठ आभास रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन ....।

अस्तेय

गिरी पड़ी रक्खी भूली भी,
पर की वस्तु नहीं लें हम।
और उठाकर दूजे जन को,
नहीं भूलकर के दें हम।।
दूर रहें चोरों-चोरी से,
प्रभु का मिले प्रकाश रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर,
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन ....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्मचर्य

वय में बड़ी मात सम मानें,
सम को भगिनी सम देखें।
अपने से जो भी हों छोटी,
उनको पुत्री सम लेखें।।
पाणिग्रहण गृहीता पत्नी,
और न कोई पास रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नतकर,
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन ....।

(महिला वर्ग के लिए)

वय में बड़े तात सम मानें,
सम को भाई सम देखें।
अपने से जो भी हों छोटे,
उनको बेटों सम लेखें।
पाणिग्रहण गृहीता ही पति,
और न कोई पास रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन ....।

अपरिग्रह

आवश्यक से अधिक न संग्रह,
यदि हो तो फिर दान दो।
दीन-हीन जीवों की सेवा,
अरु सबका कल्याण हो।।
मैत्रीभाव सभी जीवों से,
यह 'सुधेश अभिलाष रे।
दर्शन ज्ञान चरित उन्नत कर,
पाओ मोक्ष निवास रे।। अणुव्रत पालन.....।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद

प्रभु जी मैं तो शरणा तेरी बसो।
जनम जनम तक दर्शन पायो,
कर कर कर्म फसो।

पढ़-पढ़कर पंडित कहलायो,
ज्ञान न हृदय लसो।
इन्द्रिय सुख जाना विषयन में,
दिन अरु रात ग्रसो।
मधुकर से मद मस्त होयकर,
अगणित स्वाद चखो।।
प्रभु जी मैं तो शरणा तेरी बसो।

कर पतंग सी प्रीति दीप-जग,
तन छिन माहिं नसो।
जगत जाल सुख शाल समझ कर,
पुनि पुनि ओढ़ फसो।।
तप अरु ज्ञान ध्यान नहिं देकर
ताऩन माहिं हँसो।
दर्शन ज्ञान चरित हो उन्नत,
चरणन आन बसो।।
प्रभू जी मैं तो शरणा तेरी बसो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पपौरा जी

मन्दिरों का ही जहाँ मेला भरा,
वहाँ बतलाओ क्या नहिं पाओगे।
दीप धूप सुगन्ध जल से थार भर,
जब पपौरा क्षेत्र पर तुम जाओगे।। १।।

भव्य भावों से भरा हो तुम हृदय,
क्या जरूरत है किसी सामान की।
बिन ही माँगे पाओगे अक्षय सुमन,
नहिं कमी तुमको मिले मिष्ठान की।। २।।

चाँदनी ही रात में रजनी पति,
मन्दिरों की ओट में आकर बसे।
कभी कंगूरों पर इधर से उधर जा,
शिखर पर जाकर बहुत सुन्दर लसे ।। ३।।

जिनालय शोभित अनूपम,
प्रकृति का संग प्राप्त करके।
कला मानव की छिपाये,
जगत का उद्धार करके।। ४।।

खड़े हैं यह युग-युगों से,
कह रहे बीती कहानी।
कौन कहता मौन हैं वे,
कह रहे जब साफ बानी।। ५।।
है नहीं विश्वास तो,
जाकर करो तुम प्रश्न झटसे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयेगी आवाज निश्चय,
प्रश्न के पीछे ही पट से।। ६।।
जीर्ण हैं श्रुत क्षीण हैं,
बात करना जोर से तुम।
लौटकर नहिं शीघ्र कह दो,
झूठ ही कह रहे हो तुम।। ७।।

प्रतिध्वनि देगी सुनाई,
सही उत्तर तुम्हीं जानो।
अर्थ समझो या न समझो,
स्वयं की यह भूल मानो।। ८।।
उन जिनालय के लिए
जो कर रहे हैं चमत्कार
बार-बार युगल कर से,
कर रहा हूँ नमस्कार।।

(श्री दि० जैन अतिशय़ क्षेत्र पपौरा जी टीकमगढ से मात्र ५ कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सौ से भी अधिक प्राचीन भव्य दिगम्बर जैन मंदिर हैं। यह बुंदेलखण्ड के प्रमुख जैन तीर्थों में से एक है।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहार जी

प्राचीन शिल्प कला का अनुपम आदर्श

मैं रोऊँ या हँसूँ समझ नहिं आता है,
पर भग्न मूर्तियाँ देख रुदन ही आता है।
यह ललित हरित वन थली प्रकृति का राज यहाँ,
सरवर सरिता निर्झर प्रवाह का राग यहाँ।
गिरिवर गरिमा को लिए गगन को धाते हैं,
मानों क्षिति का इतिहास सुनाने जाते हैं।
जो छिपा पड़ा है उनके अन्दर मूलों में,
अरु निकल रही है सुरभि उन्हीं तरु फूलों में।
वह भी तो जग में कीर्ति-गान फैलाती है,
सुनने बाले सुनते पर वह बढ़ जाती है।
यह प्रकृति अनूपम दृश्य हृदय बहलाता है,
पर भग्न मूर्तियाँ देख रुदन ही आता है।। १।।

श्री शान्तिनाथ भगवान उन्हीं का आकर्षण,
हम आते हैं निर्भीक भले मग में हो रण।
दर्शन करते आनन्द हृदय भर आता है,
आत्मा पवित्र होती पाप धुल जाता है।
पर कला देखते हैं शिल्पी की जब हम,
कुछ क्षण रहते हैं मौन नहीं रहता गम।
उस पापी को धिक्कार आत्मा उठती मम,
जिसको करते ए भग्न नहीं आई भी शरम।
तभी हृदय में ज्वार उबल सा आता है,
पर भग्न मूर्तियाँ देख रुदन ही आता है।। २।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थोड़े से यह शिखर और इतना सुन्दर,
कई सौ थे जब शिखर रहा कितना सुन्दर ?
उनके अगणित चिन्ह आज भी याद लिये,
पड़े हुए है शान्त अचल विश्राम किये।
प्रकृति वधू तो उन्ही मन्दिरों में सोती है,
गा गाकर मधु गीत चरण उनके धोती है।
कहती है इतिहास युगों का रखे सुरक्षित,
रोयेगा दिन-रात सुने जो जाकर शिक्षित।
उस तीर्थराज को वन्दनार्थ मम शीश झुका जाता है,
पर भग्न मूर्तियाँ देख रुदन ही आता है।। ३।।

(बुंदेलखण्ड के प्रमुख जैन तीर्थों में से एक श्री दि० जैन सिद्ध क्षेत्र "अहार जी" टीकमगढ़ से २५ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ विशाल शांतिनाथ जिनालय है। यहाँ भूत-वर्तमान-भविष्य की चौबीसी भी हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्तागिरि जी

मोतियों से भरा पर्वत,
नहीं कोई ढूँढ़ पाया।
गए ही सब हाथ मलते,
पारखी कोई न आया।।
यहाँ के पारस प्रभु को,
अबुध जन पत्थर समझते।
हीन कर्मी तेल बेचें,
दीनता में हाथ मलते।।
कोटि मुनियों की चरण रज,
इसी गिरि में है समाई।
कर तपस्या त्याग तन को,
मुक्ति जिनने यहाँ पाई।।
जिन्होंने कुछ नहीं चाहा,
उन्हें ही बस दर्श होते।
लालची जन व्यर्थ श्रमकर,
जायेंगे निज अश्रु धोते।
आत्म के कल्याण को,
यह भूमि है अति ही सुहावन।
जग गई यदि ज्ञान-ज्योति,
बन जायेगा तूँ पतित-पावन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सम्मेद शिखर जी

जय सिद्ध भूमि, निर्वाण भूमि, तेरा दर्शन।
वन्दन करने से कटते हैं, कई भव बन्धन।।

यह तपोभूमि, तप करके मुनि शिवधाम गये।
पावन करके यह भूमि, शिखर अभिराम गये।।

असंख्यात मुनि, बीस तीर्थंकर, शिव गति इस थल पाये।
उनके चरण कमल के वन्दन हेतु, यहाँ हम आये।।

इस पुण्य धरा का जन-जन को है आकर्षण।
वन्दना तीर्थ की करने के वे पावन क्षण।।

बढ़ते जाते हैं चरण-चरण छूते जाते।
पावन होने की लहर तभी मन में पाते।।

ऐसे श्री तीरथराज शिखर जी को वन्दन।
माथे पर लगाओ धूल समझ करके चन्दन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमर शहीद पं० टोडरमल जी, जयपुर

धन्य हो टोडरमल !
धरा पर लेकर तुमने जन्म, धर्म का दीप जलाया था।
धर्म के लिये कष्ट सहकर, धर्म पर प्राण गँवाया था।।
किया था विद्या का अभ्यास, बहुत भाषाओं का था ज्ञान।
किया अनुवाद पुराणों का, धर्म के बने बड़े विद्वान।।१।।

सदा आया करते थे पास, लिए विद्वान तत्त्व चर्चा।
उसी में रहते मल जी निरत, समय जाता था धर्म अर्चा।।
बात यह जयपुर नगरी की, हुए हैं लगभग दो सौ वर्ष।
राज्य था माधव सिंह प्रथम, सभी रहते थे ले उत्कर्ष।।२।।

जैन नगरी कहलाती थी, जैनियों का था बड़ा प्रभुत्व।
दूसरे देख जला करते, नहीं था उनका कोई महत्त्व।।
भाग्य जब आता दुर्दिन का, सिंह भी सियार बना रोता।
नहीं जब चलता कोई उपाय, प्राण असमय में वह खोता।।३।।

बुद्धि भी हो जाती है भ्रष्ट, नहीं कर्त्तव्य ध्यान होता।
काल जाने पर आता ज्ञान, बाद में पछताता रोता।।
नृपति को भड़काया कुछ दुष्ट, रचाकर झूठ मूठ प्रपञ्च।
भूप ने सोचा समझा नहीं, जाँच कुछ भी नहिं कीन्हीं रंच।।४।।

पकड़ बुलवाए जैनी जन, हृदय में भरे हुए आवेश।
जैन शिरोमणि थे टोडर मल, उन्हीं के लिए हुआ आदेश।।
ले जाओ इस पंडित को अभी, नहीं हो इसमें कुछ भी टाल।
कुचल दो हाथी के पग तले, शीघ्र जाये ए काल के गाल।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही पंडित अपराधी है, यही करवाता है सब काम।
जैन जन माने इसकी बात, करो इसका सब काम तमाम।।
नृपति का था आदेश कठिन, कौन कर सकता था वह टाल।
सुनत ही गिरी हृदय पर गाज, सभी हो रहे विकल बेहाल।।६।।

मल्लजी की रक्षा के लिए, जैन सब कुछ कर सकते थे।
रत्न धन प्राण अगर चाहें, नृपति को सब दे सकते थे।।
मगर उस समय दशा क्या थी, नहीं कोई चूँ कर सकता।
बीच में उफ ही कहने पर, नही था जीवित रह सकता।।७।।

तुरत आ गया लिये हाथी, बधिक था उस पर बना सबार।
लिटाया पंडित जी को भूमि, सभी मन करते हाहाकार।।
मल्लजी पर पग रखकर बढ़े, कहा जब हाथी से यह गया।
किया था कभी नहीं यह कर्म, देखकर वह भी सहम गया।।८।।

अनेकों अंकुश मारे गये, जोर से करने लगा चिघाड़।
किन्तु बढ़ता था पग इक नहीं, सह रहा था वह भारी ताड़।।
बढ़ेगा हाथी आगे नहीं, अंकुश क्या चल जावें गोले।
देखकर उसकी ऐसी दशा, मल्लजी गज से यों बोले।।९।।

नहीं अपराधी तूँ गजराज, सह रहा क्यों अंकुश का बार।
नहीं सोचा नृप ने है रंच, क्यों रहा तूँ फिर सोच विचार।।
नहीं सह मेरे पीछे कष्ट, नृपति की आज्ञा को झट पाल।
रखो पग मेरे ऊपर आप, नहीं जाने दो कुछ भी काल।।१०।।

नहीं तो राजा भरकर क्रोध, तुझे भी कर देगा बेहाल।
करो भूपति की आज्ञा पूर्ण, नहीं अब करो क्षणिक भी टाल।।
सुने जब मल्लजी के यह वचन करी के आँसू भर आए।
विवश था बन्धन में पड़कर मूक पशु कुछ नहिं कह पाये।।११।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगा तब ही कस अंकुश एक, उठाया पग धरनी से नेक।
नहीं वापस रख पाया था, दिया नीचे मलजी को फेक।।
रहा कुछ देर तीन पग से, नहीं दिखलाई दी कुछ युक्ति।
जमाया चरण मल्लजी पर, जपत नवकार मिली मुक्ति।।१२।।

किया था गया घोर अन्याय, हो रहे थे दिल के दो टूक ।
देखती थी आँखें बहु पाप, किन्तु जाती थी नहिं वे फूट।।
नहीं इतने तक ही हद थी, किया शव के संग में क्या पाप।
नहीं जैनों को था वह दिया, कथन में होता है संताप।।१३।।

नगर की गिरे गंदगी जहाँ, कराया उसमें गड्ढ़ा एक।
मल्ल जी के शव को उस माहिं, दिया या बुरी तरह से फेक।।
देखते आँखों के अन्याय, पिया जैनों ने विष का घूँट।
नहीं कोई भी चूँ कर सका. चला दी हो उन पर ज्यों मूठ।।

हाय अन्याय महा अन्याय, धर्म के खातिर हमने सहा।
धर्म पर देकर के बलिदान, धर्म का दीपक जलता रहा।।
व्योम क्षिति सूर्य चन्द्र आदिक, जगत क्रम जब तक चलता रहे।
चाहते हैं केवल बस यही, धर्म का दीपक जलता रहे।।

हुए बलिदान और होंगे, धर्म के लिए चढ़ा दें शीश।
किन्तु पथ से पीछे न हटें, वीर से चाह रहे आशीष।।
मनायें उन वीरों की जन्म-पुण्य तिथियाँ मिल धर्म समाज।
जिन्होंने जीवन अर्पण किया, धर्म पर त्याग सभी सुख साज।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान

करता जा तूँ दान, अरे नर करता जा तूँ दान
है यह पुण्य महान, अरे नर करता जा तूँ दान।।

आहार दान

जाने कैसे पाप कमाए,
अपना उदर नहीं भर पाए।
क्षुधा वेदना से पीड़ित जन,
उनको भोजन दान। अरे नर........।।

औषधि दान

शाकाहार नहीं अपनाया,
नहीं समय से भोजन पाया।
रोग-व्याधि से ग्रसित हुये जो,
उनको औषधि दान। अरे नर.......।।

ज्ञान दान

अक्षर ज्ञान भले ही पाया
आतम ज्ञान तनक नहिं आया।
मिथ्यातम में भटक रहे जो,
उनको दो सद्ज्ञान। अरे नर........।।

अभयदान

हिंसक जन, बहु जीव सताएं,
दयाभाव मन में नहिं लाए।
वध-बन्धन से पीड़ित प्राणी,
रक्षा धर्म महान। अरे नर...........।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नए वर्ष का स्वागत गान : वीर प्रभु तेरी जय हो।

वीर प्रभु तेरी जय जय हो।
नया वर्ष यह मंगलमय हो।।

जाग उठें सब शुष्क हृदय,
अरू करें ज्ञान संचार।
नये भव्य भावों को लेकर,
होवे सुखद प्रचार।।

सेवाभाव ध्येय हो निश्छल,
दीनों का उपकार।
लगन हमारी हो प्रभु,
जैसी दीप पतंग प्यार।।

जीवन में प्रभु ज्योति जला दे,
सत पर मरना भी सिखला दे।
शान्ति कान्ति अरु क्रान्ति रहे,
रवि रश्मि ज्यों किसलय हो।
शिशु के तम का महाप्रलय हो,
वीर प्रभु तेरी जय जय हो।
नया वर्ष यह मंगलमय हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ स्तुति

शान्ति भज शान्ति भज शान्ति भजे जा।
कुन्थ कुन्थ कुन्थ अरहनाथ भजे जा।।
श्री पाणाशाह सेठ को अतिशय यहाँ हुआ।
बैलों पर लदा राँगा यहाँ रजत था हुआ।।
इस भूमि का प्रताप देख सेठ था लजा।
शान्ति भज शान्ति भज शान्ति भजे जा।।१।।

सम्पूर्ण रजत सेठ ने खर्ची थी यहाँ पर।
श्री शान्ति कुन्थ अरहनाथ मूर्ति रचाकर।।
पापट से कलाकार ने न कीन्हीं कुछ कजा।
शान्ति भज शान्ति भज शान्ति भजे जा।।२।।

इक बार सेठ निकले यहाँ पर से वणिजकर।
दर्शन की थी प्रतिज्ञा मुनि दर्श प्राप्तकर।।
आहार दान देकर भगवान को भजा।
शान्ति भज शान्ति भज शान्ति भजे जा।।३।।

जो कोई यहाँ आता आशा को पूर्णकर।
जाता है सुखी होकर दु:खों को दूरकर।।
कहते 'सुधेश' शान्ति भज शान्ति भजे जा
शांति भज शांति भज शांति भजे जा।
कुंथ कुंथ कुंथ अरहनाथ भजे जा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्ति-कुंथु-अरहनाथ भजन

शान्ति को नमन कर कुन्थु को ध्याऊँ मैं।
प्रभू अरह के चरणों में शीश झुकाऊँ मैं।।

धन्य भाग्य प्रभु दरशन पाए
जाने कब फिर चरनन आए
दर्श करत मन कलि खिल जाए
जन्म जन्म के पाप नसाए
निशि वासर प्रभु तेरे गुण गाऊँ मैं
शान्ति को नमन कर कुन्थु को ध्याऊँ मैं ।।१।।

कर व्यापार सेठ यहाँ आए
राँगा भरे बैल बहु लाए
रात्रि माहिं यहाँ पर ठहराए
रजत देख भारी घबराए
वापस कराये बैल फेर जल्द आऊँ मैं।
शान्ति को नमनकर कुन्थु को ध्याऊँ मैं ।।२।।

वापस पहुँच सेठ जी बोले
राँगा में चाँदी दी भोले
ज्यों ही बोरों के मुँह खोले
राँगा देख रहे अनबोले
विस्मय में पड़े आय ठहरे इस ठाऊँ मैं
शान्ति को नमनकर कुन्थु को ध्याऊँ मैं ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाने की जब की तैयारी
बोरे देखे भारी भारी
खोले देखी चाँदी न्यारी
अतिशय समझ खर्च की सारी
जिन मन्दिर मूर्ति रचा पूजा रचाऊँ मैं।
शान्ति को नमनकर कुन्थु को ध्याऊँ मैं ।।४।।

ऐसी महिमा है प्रभु तेरी
बुद्धि वाणी चरणन की चेरी
गुण गावत करती नहिं देरी
पार नहीं पा सकें घनेरी
आश लगाए प्रभु बार-बार आऊँ मैं।
शान्ति को नमनकर कुन्थु को ध्याऊँ मैं ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीर्तन : चौबीस तीर्थंकर

नित प्रति भज प्रभु उदित दिनेश के।
चरण कमल ध्याऊँ प्रथम जिनेश के।।

आदिनाथ अजितेश्वर स्वामी।
सम्भव भव अभिनन्दन नामी।।
सुमत पद्म प्रेतों के हर्ता।
श्री सुपार्श्व जी मंगलकर्ता।।
चन्द्र वरण छवि चन्द्र जिनेश के।
चरण कमल ध्याऊँ प्रथम जिनेश के।।१।।

सुबिधिनाथ जी सद्बुधि देते।
शीतल श्रेय जगत का लेते।।
बासुपूज्य पूजत सुख पावत।
विमल बुद्धि गुण को उपजावत।।
नाथ अनन्ता अनन्त सुख देत के।
चरण कमल ध्याऊँ प्रथम जिनेश के।।२।।

धर्मनाथ जी धर्म प्रसारक।
शान्तिनाथ जी शान्ति विधायक।।
कुन्थुनाथ कुल के उद्धारक।
अरहनाथ अरि के हैं हारक।।
मल मल तन पग नमत मल्लेश के।
चरण कमल ध्याऊँ प्रथम जिनेश के।।३।।

मुनिसोव्रत व्रत के हैं सधैया।
नमिनाथ दीनन के भैया।।
नेमिनाथ राजुल के तरैया।
पारस प्रभु उपसर्ग निभैया।।
शरणा में आया वीर जिनेश के।
चरण कमल ध्याऊँ चौबीसों जिनेश के।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देश भक्ति गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बापू जयन्ती

जन्म दिवस है आज आपका, जिसे मनाने आया।
श्रद्धा रखता हूँ चरणों में, वही चढ़ाने लाया।।
देश पड़ा था पर बन्धन में, जञ्जीरों को तोड़ा।
और विश्व से भाई-भाई, का नाता भी जोड़ा।।

दिखा दिया जग को बापू ने, क्या है अहिंसा शक्ति।
भारतवासी मातृभूमि के प्रति रखते हैं भक्ति।।
अमर शहीद हुए अगणित भी, पाने को आजादी।
देशभक्ति का बाना पहिना, वही स्वदेशी खादी।।

अधिक कहूँ क्या ज्ञान नहीं है, भाव नहीं है भाषा।
बस यह एक फूल चरणों में, रखने की अभिलाषा।।
इसके पहले आज आपसे, एक कामना करता।
सत्य अहिंसा पथ हो मेरा, यही भावना रखता।।

विश्व रहे सब सुखी शान्ति से, आनंद सहित विचरता।
श्रद्धा सहित समर्पित बापू, श्रद्धान्जलि हूँ करता ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० जवाहर लाल नेहरू

ओ शान्ति दूत ओ शान्ति दूत,
भारत माता के परम पूत।

(१)

मोती के नहीं जवाहर हो,
भारत माता के नाहर हो।
विश्व–शान्ति स्थापना को तुम
जगती तल पर जाहर हो।।
स्वातन्त्र्य सुधा बरसाने को,
आए जैसे हो पवन दूत ।
ओ शान्ति दूत ओ शान्ति दूत
भारत माता के परम पूत ।।

(२)

तेरी वाणी में आकर्षण का,
मधुमय जीवन तार छिपा ।
तेरी वाणी में अरियों को
अहि जैसा फुंकार छिपा ।।
यदि नेत्र अरुण हो गए कहीं
तो अरियों का नहिं चला कूत ।
ओ शान्ति दूत ओ शान्ति दूत
भारत माता के परम पूत ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

सुख सेजों का स्नेह त्याग
स्नेह विश्व का है पाया
भारत ने ही नहीं किन्तु
जग ने तेरे यश को गाया ।।
बँध गये प्रेम बन्धन में सब,
कच्चे खादी के एक सूत ।
ओ शान्ति दूत ओ शान्ति दूत
भारत माता के परम पूत।।

(४)

जुग जुग तक जियो जवाहर तुम,
बने रहो भानु से तुम आकाश।
स्वच्छन्द भाव, कर्तव्य ज्ञान का
जग पाये तुमसे प्रकाश।।
मानव को मानव बना दिया,
कर दूर देश से छुआ छूत।
ओ शान्ति दूत, ओ शान्ति दूत,
भारत माता के परम पूत।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संत विनोबा भावे

(१)

गीता गंगा स्रोत बह रहा जिस मानव में,
वही संत जा रहा माँगने भिक्षा दर दर।
नहीं चाहता निज को इक तिनका या कण भी,
मांग रहा उनके हित भूखे सोते नित घर।

(२)

उन नंगे, अधनंगे और अपच बालों से,
समता का है प्रश्न प्रेम से हो जाये हल।
सबको आवश्यक भोजन भूमि मिल जाये,
नहीं लगाना पड़े किसी को हिंसात्मक बल।।

(३)

गाँव गाँव में घर घर जाकर
वृद्ध विनोबा संत।
फूँका करता पैदल चलकर
भूमिदान हित मंत्र।।

(४)

चार पुत्र हैं अगर, पाँचवाँ मुझको मानो।
मेरा हिस्सा मुझे दीजिए भले किसानो।
लाखों एकड़ भूमि दान में, जहाँ जहाँ भी पाई।
उसी ग्राम के दीन जनों को,तुरत दई बटवाई।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५)

भूमिदान के बाद संत के,
ग्राम दान मन भाया।
सर्वोदय से बढ़कर आगे,
अन्त्योदय अपनाया।।

(६)

बापू के पद चिन्हों पर चल,
सहे कठिन उपसर्ग।।
देश भक्ति कैसे की जाती,
दिखा दिया आदर्श।।

(७)

ऐसे संत विनोबा पंडित,
बहु भाषा के ज्ञानी।
जीवन अर्पण किया देश हित
उनकी अमर कहानी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शहीद श्रद्धांजलि

उन अमर शहीदों को मेरा,
शत शत प्रणाम–शत शत प्रणाम।
बन गए नींव के पत्थर जो,
इस आजादी के भव्य धाम।।

(१)

कितनों के माँग सिंदूर गए,
कितनी बालाएँ पितृहीन।
कितनों के खाली कूख हुये,
कितने अनाथ अरु बने दीन।
शूली पर बिन अपराध चढ़े,
गोली से अगणित भून दिये।
जीवित ही जिनको चिना दिया,
चल बसे स्वयं को खून पिये।
केवल निकला जिनके मुँह से,
अन्तिम दम तक जयहिंद राम।
उन अमर शहीदों को मेरा,
शत शत प्रणाम–शत शत प्रणाम।

(२)

जेलों की यातनाएँ कैसी,
बिजली के हण्टर रोज पड़े।
खाने पीने को मिला नहीं,
चक्की भी पीसी खड़े खड़े।
काले पानी की सजा मिली
बहुतों को मग में दिया डुबा।
कोठी में बंद किये जितने,
मर गए विचारे बिना हवा।
नहिं देख सके कब प्रात हुआ,
कब आयी उनके लिये शाम।
उन अमर शहीदों को मेरा,
शत शत प्रणाम–शंत शत प्रणाम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

भर दिया खाल में नमक मिर्च
तड़फे जैसे जल बिना मीन।
पर झुके नहीं, अरु रूके नहीं,
हो गये भले तन छीन छीन।
अंतिम श्वांसों तक भारत जय,
हण्टर से निकला भारत जय।
सन्टर से निकला भारत जय,
फाँसी पर निकला भारत जय।
गाँधी-सुभाष-नेहरू की जय,
कहते पहुँचे वे स्वर्ग धाम।
उन अमर शहीदों को मेरा,
शत शत प्रणाम-शत शत प्रणाम।

(४)

जलियाँवाला जैसी घटना,
जाने कितनी घट गईं यहाँ।
इतिहास नहीं लिख पाया है,
ओ अमर शहीदो गए कहाँ।
लाठी झेली, गोली खाई,
छाती पर छिदते गये तीर।
पर,अँग्रेजो भारत छोड़ो,
कहते कहते बन गए पीर।
कुर्बानी उनकी अमर रहे,
इतिहास छिपाये नहीं नाम।
उन अमर शहीदों को मेरा,
शत शत प्रणाम-शत शत प्रणाम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजनेता-१

तब का नेता

तब का नेता, कुछ नहीं लेता, जीवन देता।

(१)

लोटा रस्सी निज की लेकर, अपना ही वह पानी पीता।
बहिनें माताएँ जो संग में, उनको पूजा जैसे सीता।
नहीं स्वार्थ की रही भावना, घर का तो उसने सुख छोड़ा।
जैसे साधु-संत पुरुषों ने, विषय वासना से मुख मोड़ा।

कठिनाई कैसी ही आये, पीछे कदम कभी न देता।
जग-जन की सेवा में रत रह, वह अपना तन मन धन देता।
तब का नेता, कुछ नही लेता, जीवन देता।।

(२)

रहा सुदर्शन-चक्र साथ में, सूत कातकर पहनी खादी।
आजादी पाने के खातिर, नहीं कराई उसने शादी।
ब्रह्मचर्य अस्तेय अपरिग्रह, सत्य-अहिंसा पालन करता।
ऊँच नीच अरु छुआछूत तज, निर्भर रह श्रम साधन करता।

सत्याग्रह के पथ पर चलकर, महिनों तक अनशन कर लेता।
जेल यातना गोली खाकर, जन हित में निज जीवन देता।
तबका नेता, कुछ नहीं लेता, जीवन देता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजनेता-२

आज का नेता

आज का नेता, रिश्वत लेता,
अफसर से चपरासी तक को,
जैसी चाहे गाली देता।। आज का नेता ....।।

(१)
सत्य बात यह नहीं जानता,
पूरे मिथ्या भाषण देता।
चिकनी चुपड़ी बातें कहकर,
नारी का सतीत्व हर लेता। आज क़ा नेता ......।।

(२)
श्रमिकों का यह बना बाप है,
और महाजन का है बेटा।
वोट चाहने होते हैं जब,
बन जाता है गधे का लेटा। आज का नेता .....।।

(३)
सूत कातना नहीं जानता,
खादी से तन को ढक लेता।
अपनी बात पुष्ट करने को,
कसम गाँधी की खा लेता। आज का नेता ....।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

ठेकेदारी में यह माहिर,
यह विक्रेता, यह है क्रेता।
बीबी बच्चों के नामों से,
शासन का धन यह हर लेता। आज का नेता...।।

(५)

काश कहीं बन गया मिनिस्टर,
सब साधन से घर भर लेता।
आप जाइये उससे मिलने,
तो झूठे आश्वासन देता। आज का नेता ...।।

(६)

तिलक, गोखले, घोष, पाल के,
नामों को यह नहीं जानता।
अमर शहीद हुये हैं जितने,
उनकी बातें नहीं मानता।
दस्यु चोर का है वह साथी,
सब सुविधाएँ उनको देता।
भक्षक का रक्षक बन करके,
जेब गर्म अपनी कर लेता। आज का नेता ...।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुख का साम्राज्य बने कैसे?

जब भारत के नेता गण भी,
शासक जनता के हो जाते।
फिर अपने स्वारथ में लगकर,
जनसेवा से च्युत हो जाते।।
क्या हो सकता है हित ऐसे,
सुख का साम्राज्य बनें कैसे।।१।।

जब घर के घर में प्रेम नहीं,
करते आपस में है झगड़े।
धन द्रव्य व्यर्थ में नष्ट करें,
अरु न्यायालय मे रहें पड़े।।
गृह में जब प्रेम रहे ऐसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।२।।

इक ओर अमीरों को देखो,
कैसा सुखमय जीवन इनका।
कुत्तों को दुग्ध पिला करके,
यह व्यर्थ नष्ट करते धन का।।
देखो इनके ठाठ हैं कैसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।३।।

इक ओर गरीबों को देखो,
कितना वे परिश्रम हैं करते।
तो भी खाने के लिये नहीं,
भूखों बच्चे उनके मरते।
तन पर भी वस्त्र नहीं जिनके,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन कहे जमाना मिथ्या का,
मिथ्याती ही सुख पाते हैं।
जो सत्य अहिंसा पथ चलते,
आपत्ति से दु:ख पाते हैं।।
यह हो सकता है सच कैसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।५।।

सत को जब से तुमने छोड़ा,
सुख ने तब से तुमको छोड़ा।
तब से ही है पतन तुम्हारा,
मिथ्या से जब नाता जोड़ा।
बतलाओ उन्नति हो कैसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।६।।

मैं तो कहता हूँ एक यही,
जहाँ सत्य वहीं पर सुख होता
है भूल कहें मिथ्या को सुख,
वह तुच्छ हृदय का नर होता।।
मिथ्याती, पायें सुख कैसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।७।।

जो आज यहाँ पर दुराचार,
अन्याय पाप आदिक होते।
उनको हम नष्ट करें अब भी,
देखते भी नहीं रहें सोते।।
सब रहें इन्द्र सम सुख जैसे,
सुख का साम्राज्य बने कैसे।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोवा की स्वतंत्रता

गोवा कब तक पड़ा रहेगा पुर्तगाली बन्धन में।

नहीं समझ लेना भारत हो गया स्वतंत्र।
और चल रहा है सुख से, भारत में जनतंत्र।।
बड़ी बड़ी योजना चल रही, बजते सुखद नगारे।
जीवन को अलमस्त बना के, गाते गीत प्यारे।।
चिन्ता नहीं स्वयं संकट की, झूम रहे क्रन्दन में,
गोवा कब तक ....।।१।।

आग सुलगती फिर बुझ जाती, बढ़ने अधिक न पाती।
चिनगारी भी नहीं निकलकर, विस्तृत रूप बनाती।।
बात यही है कि अब तक, आँधी नहीं चली है।
जिसने बुझ जाने की तो, देखी नहीं गली है।।
कामदेव क्या क्रीड़ा करता, गोवा के प्रांगण में,
गोवा कब तक ....।।२।।

जब तक कोई अंश देश का, नहीं स्वतंत्र हुआ है।
या भारत का एक व्यक्ति भी, बन्धन पड़ा हुआ है।।
तब तक नहीं स्वतंत्र हुए तुम, ए गाना भी रोना है।
भारत माता अश्रु बिन्दु, अब खून बहा धोना है।।
करो प्रतिज्ञा आज सभी, गोवा न रहे बन्धन में,
गोवा कब तक..।।३।।

आगे आओ बढ़ें बता दें, भारत में क्या शक्ति।
भारतवासी क्या रखते हैं, दुनिया में निज हस्ती।।
पुर्तगाली जो राज्य कर रहे, मम गोवा की बस्ती।
चलों भगा दें तथा मिटा दें, उन्हें चढ़ी जो मस्ती।।
और बता देंगे गोवा भी नहीं रहा बन्धन में,
गोवा कब तक ....।।४।।

(यह रचना २० मई १९५७ में लिखी गयी उस समय गोवा पुर्तगाल के कब्जे में था)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झण्डा दिवस

ये झण्डा उन्हीं शहीदों का,
बलिदान हुए आजादी पर।
सिर चढ़ा दिया हँसते हँसते,
पर झुके नहीं बरबादी पर।।

उनकी मातायें बीबी बच्चे
हैं खुशी भले बलि जाने पर।
पर दाने के लिये तरसतीं,
भीख माँगती हैं घर-घर।।

क्या शोभा देता है हमको,
उनका भीख माँगना घर-घर।।
जिनने अपने लाल दे दिये,
आजादी बलिवेदी पर।।

उन् माताओं की रक्षा को,
भीख माँगते हैं हम सब।
हृदय प्रफुल्लित करके दे दो,
नहीं कमी रह जाये अब।।

उन वीरों के बृहद त्याग पर,
सूक्ष्म त्याग तुम भी कर दो।।
लेकर उनका चिह्न हृदय रख,
श्रद्धान्जलि अर्पित कर दो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतंत्रता दिवस

नमस्कार है उन वीरों को जिनने दिन दिखलाया यह ।
दीपक पर ज्यों प्राण सुलभ दे आहुति दे त्यों पाया यह।।

रही अहिंसा भले बीच में पर हिंसा का घात सहा है।
गोली सही खुले सीने पर आगे को ही कदम रहा है।

इसी दिवस के लिए अनेकों ने अपना घर त्याग दिया था।
इसी दिवस के लिए अनेकों ने जीवन बलिदान किया था।

हमें आज रक्षा करना है, मिली देश की आजादी।
क्रोध लोभ मद स्वार्थ त्याग दो, करो न निज की बरबादी।।

सभी दिंशाओं में हो उन्नति, नहीं विदेशों से माँगे।
स्वाबलम्बी हो देश हमारा, बढ़ जावे सबसे आगे।।

चलों आज हम उन वीरों के पथ का ही लेकर के त्राण।
देशोन्नति के लिए जिन्होंने दिए हर्ष से अपने प्राण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जागो भारतवासी (चीनी आक्रमण)

सोने से काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।

जागो भारतवासी, चीनी तुम्हे जगाने आये।
ओ अपनी करतूत, तुम्हारे लिए दिखाने आए।।
हुआ देश स्वतंत्र और तुम तान पिछौरा सोए।
अपनी बीती घटनाओं की पुरी सुध बुध खोए।।
अब ऐसे काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।१।।

कोई नहीं विशेष प्रगति, हम अब तक हैं कर पाये।
और कागजों पर ही केवल बहुत बाँध बनवाये।
ले लेकर विदेश से कर्जा हम निर्धन कहलाए।
और समस्या दूर रही, हम भोजन पुजा ना पाये।।
अब भी क्या ध्यान नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।२।।

उत्पादन को खूब बढ़ाओ हो आराम हराम।
क्षमता समता अधिक बढ़ाओ, मेहनत से हो काम।।
नहीं किसी के रहें सहारे, यदि साधन सभी जुटाये
नहीं किसी की ताकत है, जो हम पर आँख उठाये।।
कहने से काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाकर भारत की कमजोरी, चीन चढ़ा है आता।
अरे जवानों होश संभालो, क्या यह देखा जाता।।
आज देश संकट में है, बढ़ती जाती आपत्ति।
भारत माँ की लाज बचाओ, दे तन मन सम्पत्ति।।
छिपने से काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।४।।

झाँसी की लक्ष्मीबाई वो विधवा रानी।
जीवित दिया न राज लाज रख हिन्दुस्तानी।।
दुर्गा भी बन गई युद्ध में महा भवानी।
पुरुषों की क्या कहें, नारियाँ थी मर्दानी।।
डरने से काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।५।।

भारत है वह देश जहाँ का बच्चा बच्चा।
दे सकता है प्राण देश की करने रक्षा।।
वीर शिवा राणा प्रताप की सन्तानें हम।
बिना हटाये चीनी को नहिं लेवेंगे दम।।
झुकने से काम नहीं होगा।
सोने से काम नहीं होगा।।६।।

(यह कविता १९६२ में भारत पर चीन द्वारा आक्रमण करने के समय लिखी गई थी)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाधक नहीं बनो

तुम काम नहीं कर सको, तो बाधक नही बनो।
दूजों को लेकर गिरो, तो साधक नहीं बनो।।

इस दुनिया का व्यवहार बड़ा ही चंचल है।
शिशु भी करता है प्रेम भरा यदि अंचल है।।
पाकर उरोज बिन दुग्ध शोर बहु करता है।
करता इच्छा को पूर्ण शान्त तब रहता है।।
फिर बड़े व्यक्तियों की बातों का क्या कहना।
उन्हें नहीं बन्धन में किसी के है रहना।।
जो आता है मन माहिं किया वह करते हैं।
बिन सोच समझा के चले गढ़े में गिरते है।।
ऐसा है यदि तो वाहन चालक नहीं बनो।
तुम काम नही कर सको तो बाधक नहीं बनों।।

पल पल का समझो मूल्य व्यर्थ मत नष्ट करो
दन्दों-फन्दों के बीच व्यर्थ मत कष्ट करो।।
विश्वासघात करने वालों से दूर रहो।
कर सप्त व्यसन का त्याग पाप से दूर रहो।
पथ ऐसा करो प्रशस्त रहे आदर्श सदा।
जग के जन बढ़ते चलें करें उत्कर्ष सदा।।
जिधर पथ अन्धकार में हो उधर पग नहीं धरो।
जिसे तुम ठीक समझ न सको हृदय मत कभी भरो।
वस्तु परख न सको तो ग्राहक नहीं बनो।
काम नही कर सको तो बाधक नहीं बनो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामाजिक गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्या जी

(श्री राम का मन्दिर बन जाने दो)

जहर नहीं घोलो अमृत में, मधुरस सरसाने दो।
राजनीति के दाव-पेंच तज, मन्दिर बन जाने दो।।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

ऐनक खोलो, माटी खोदो, हर कण बोल रहा है।
राम काज के लिए इन्द्र, आने को डोल रहा है।।
झुक-झुक जाती है अमराई, अपना शीश चढ़ाने।
तुम भी बढ़कर आगे आओ अपना मान बढ़ाने।।
तन नश्वर है, क्षण नश्वर है, यह नहिं टल जाने दो।
राजनीति के दाव पेंच तज, मन्दिर बन जाने दो।।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

जन्मभूमि यह राम लला की, इसमें भी क्या शक है?
मन्दिर मिटा बनाई मसजिद बनी हुई अब तक है।।
ताज रखे सिर पर हम रोये, निकल न पाई आहें।
हाथ बढ़ाया करने को कुछ, कटी हमारी बाहें।।
देश हुआ आजाद आज भी मुक्त गीत गाने दो।
राजनीति के दाव पेंच तज मन्दिर बन जाने दो।।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

शिखर गिराया, शिखा कटाई गुम्मद को पधराया।
बाबर से औरंगजेब तक कितना कहर ढहाया।।
है इसका इतिहास साक्षी, जजिया कर का किस्सा।
कितने आये थे मुसलिम अरु कितना हिन्दू हिस्सा।।
मुसलिम हिन्दू एक साथ मिल राम गीत गाने दो।
राजनीति के दाव पेंच तज मन्दिर बन जाने दो।।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आजा जफर उठा ले कन्नी, गारा मैं देता हूँ।
छितिया के सिर पर की छिटिया अपने सिर लेता हूँ।।
मिल करके सब करें काम, यह राम मंत्र सुखदाई।
नीर-क्षीर सम घुलमिल रहिये इसमें राष्ट्र भलाई।।
जन्मभूमि पर राम लला का मन्दिर बन जाने दो।
राजनीति के दावपेंच तज मन्दिर बन जाने दो।।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

राम लला की जन्मभूमि पर, कब तक यह झक-झक है?
आस्तिक का अधिकार नहीं, तो क्या नास्तिक का हक है?
मेरा राम, नहीं मैं पाऊँ, कोई न्याय करेगा?
गाँधी के स्वतंत्र भारत में कब तक अन्याय रहेगा?
सोचो समझो टेक न पकड़ो, सद् बुधि मन आने दो।
राजनीति के दाव पेंच तज मन्दिर बन जाने दो।
राम का मन्दिर बन जाने दो।।

(यह रचना सन् १९९० में अयोध्या में कार सेवा के समय लिखी गयी थी)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धांजलि : गोस्वामी तुलसी दास जी

बाह रे महासन्त !

तुम चलते रहे अडिग ही अपने पथ पर।
आये तम मेघ छिपाने पर थे दिनकर।।
कब तक छिपते उन भटकीले मेघों से।
क्या सन्त डरा करते हैं असि तेगों से ?

तुम महा सन्त थे सत के ही अनुयायी।
तुम में ही सच्ची राम-भक्ति थी पाई।।
जो बही धरापर महास्रोत को लेकर।
श्री राम चरित मानस स्वरूप ही देकर।।

जिसकी वाणी जन-जन के मन में भायी।
गाते जाते मिल स्वर से भाई-भाई।।
मातायें बहिनें वृद्ध और बालक सब।
पहले करते प्रभु ध्यान काम करते तब।।

यह महामंत्र उस महासन्त का ही था।
बतलाया पथ पाने को मुक्ति रती का।।
बन गया भानु साहित्य गगन में तुलसी।
था मन्जु रश्मि खिल गई कली बहु गुल सी।।

वे अमर रहें जब तक यह अमर धरा है।
गायें उनका संगीत प्रभाव भरा है।।
है विश्व पूज्य माता तुलसी की हुलसी।
जिसने वसुधा को दिया संत इक तुलसी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलियाँ : तुलसीदास जी

(१)

तुलसी जी की जन्म तिथि,
पन्द्रह चउअन जान।
और पुण्य तिथि विक्रमी
सोलह अस्सी मान।।

सोलह अस्सी मान गुरु नरहरि को मानो।
पिता आत्माराम तिया रत्नावली जानो।
धन्य धन्य वह विश्व पूज्य है माता हुलसी।
जिसकी गोदी पला अमर कवि हिन्दी तुलसी।।

(२)

व्यंग वाण उपदेश से,
तुलसी बन गये संत।
धन्य धन्य रत्नावली,
पैदा किया महंत।।

पैदा किया महंत राम से प्रीति लगाई।
राम चरित मानस, गीतावलि कविता गाई।।
राम लला नहछू लिखी मंगल आया रंग।
विनय पत्रिका लिखत ही सफल हो गया व्यंग।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दहेजी-कुण्डलियाँ

पूर्व चला करती प्रथा, मृत्यु समय गो-दान
उससे भी विकराल यह, चला दहेजी दान।
चला दहेजी दान, मान सम्मान न चाहें।
सह लेते अपमान, द्रव्य बेशर्म मंगाएँ।।
कहें 'सुधेश' समझाय, अरे निज सुत मत बेचो
पा मनुष पर्याय, पाप की पर्दा खेंचो।।

पर्दे के पीछे चला, करती लूट घसोट।
बिन पर्दे चलने लगे, अब दहेज के नोट।
अब दहेज के नोट, सहस्रों की संख्या में।
आभूषण अरु वस्त्र, साथ में भी बहु लावें।
कहें 'सुधेश' समझाए, परिग्रह छोड़ो भ्राता।
पावन पथ के पथिक, प्रेम से जोड़ो नाता।।

दान दहेज अरु दक्षिणा, यही पुरातन रीति।
चली आ रही थी विमल, अन्तर घटी न प्रीति।
अन्तर घटी न प्रीति, समय का आया फेरा।
धर्म कर्म से मुक्ति, स्वार्थ ने सबको घेरा।।
कहें सुधेश समझाए, क्रूरता से मत नोंचो।
करो नहीं ठहराव, अश्रु दीनों के पोंछो।।

प्रीति जोड़ने को चले, करते हैं ठहराव।
बोली गोली सी लगे, हृदय करे जो घाव।
हृदय करे जो घाव, बात क्या होगी नीकी।
विवश होय सम्बन्ध, अन्त में होगी फीकी।।
कहें 'सुधेश' समझाए, प्रेम में पैसा कैसा।
मत कीजे ठहराव, जायेगा आया-जैसा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुम्भकार

कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।
यहाँ पड़े अब हम सब मिट्टी के बर्तन।।

किस कोमल कर की थपकी ने सहला सहला।
हमें दिया था रूप नया पहला पहला।।
विश्व चक्र का ज्ञान चक्र से सिखलाया।
और सृष्टि के पूर्व अन्त उसने पाया।।
आज पड़े है मग में कोई नहीं सदन।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।१।।

तपा तपाकर मुझको स्वर्ण बना पाया।
किन्तु हाट में कीमत आँक नहीं पाया।।
छोड़ा क्यों स्वच्छन्द करो प्रत्यावर्तन।
जाते जाते कहा चुकाना मेरा धन।।
सोच रहा हूँ पंगु चुकाऊँ कैसे ऋण।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।२।।

अब तो वह मिट्टी है, मैं उससे बढ़कर।
कुछ ही समय पूर्व आया था सिर चढ़कर।।
अब उसको कंधों पर जाते देख रहा।
जीवन का यह चक्र सदा से लेख रहा।।
कहाँ कर रहे मुझे छोड़कर अरे गमन।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानव ने मानव की मिट्टी ले जाकर।
दिया धरा में सुला सदा को लेटाकर।।
शिशु योवन अरु वृद्ध अवस्था के सब दिन।
गए शीघ्र ही निकल नहीं पाया भी गिन।।
लगा हुआ है सदा प्रकृति का परिवर्तन।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।४।।

पर मैंने अपना कर्तव्य नहीं छोड़ा।
हुआ भले अवसान नहीं मुख को मोड़ा।।
तीनों पन की तीनों पग की तिखटी पर।
तीजे दिन को हुआ उऋण जीवन देकर।।
मरघट की मिट्टी में देकर के जीवन।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।५।।

मेरा ही अनुकरण आज हैं सब करते।
पितरों[१] में पुरखों को प्रतिदिन पय देते।।
मैं तो हूँ निर्जीव और तुममें जीवन।
जीवन[२] देकर सेवा में पाओ जीवन।।
बड़ी मिली है देह छिपाओ नहीं बदन[३]।
कुम्भकार चल बसा कुम्भ ने किया रुदन।।६।।

(यह कविता १९६१ की एक सत्य घटना पर आधारित है। दिगौड़ा ग्राम के बाजार में मिट्टी के बर्तन बेचने आये कुम्भकार की अचानक हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गयी। अब बिना सहारे के पड़े हुए 'कुम्भ' की ओर से कवि ने यह कविता लिखी थी।)

---

१. पितृपक्ष   २. जल   ३. मुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूक पशु

पशु यदि कुछ कह भी पाते, तो सम्भाषण करते,
तुमसे-तुमको पतित बताते, पशु यदि कुछ कह भी पाते।

मक्खन दूध मलाई भोजन, सब उनका ही श्रम है।
फिर भी उनकी सेवा में क्यों रहता तुमको भ्रम है।

जीवन में उनको भूसा, भरपेट नहीं मिलता है।
पशुशाला के गोबर से, बहुमूल्य खाद बनता है।

बन्धन में पड़ करके, आपके कष्ट सहन करते हैं।
और तुम्हारी आवश्यक बहु कमी पूर्ति करते हैं।

एक टके की नहीं दवाई, जीवन में खाते हैं।
और मर जाने के बाद चाम तक तुमको दे जाते हैं।

इतने पर भी शर्म नही हैं, डण्डे देते जाते।
पशु यदि कुछ कह भी पाते, तो सम्भाषण करते,
तुमसे तुमको पतित बताते, पशु यदि कुछ कह भी पाते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाकाहार

हिंसा से रहते दूर वही सच्चे हिन्दू,
आमिष भोजी सच्चे हिन्दू नहिं हो सकते।
जो दयाधर्म का पालन करते हैं बन्धू,
उनका करते गुणगान सन्त भी नहिं थकते।।१।।

माँ की गोदी में जन्म लिया ज्यों ही शिशु ने,
माँ के स्तन से धवल दुग्ध की धार बही।
यदि गई सिधार प्रसव पीड़ा में माता भी,
तो मदिरा प्याला नहीं पिलाया गया कभी।।२।।

भर दिये सरोवर सिन्धु सुजल से वसुधा पर,
कल-कल करती बहतीं सरितायें अनेक।
निर्झर झरते निर्मल जल से पूरित होकर,
पर गंध नहीं पाई आमिष की कहीं नेक।।३।।

पर कुछ जन इस तन को कब्र बनाते रहते हैं,
वे नहीं सोचते अपने से छल करते हैं।
शाकाहारी तोता-मैना अरु मृग-बन्दर,
पशु-पक्षी से भी लो शिक्षा तो अति सुन्दर।।४।।

यह धर्म-कर्म की नहीं, स्वास्थ्य की सही बात,
बढ़ गई विदेशों में, शाकाहारी जमात।
नहिं करो क्रूर आघात, नष्ट मत करो सृष्टि,
अपनाओ शाकाहार, रखो तुम दया दृष्टि।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जागो : समय पल पल जा रहा है

घट रहा है समय पल पल, हाथ मलता जा रहा है।
काल के मुख ओर भाई, कदम बढ़ता जा रहा है।।

देह पाई भी मनोहर,
और पाया ज्ञान भी है।
पर न चाहा देश का,
तुमने कभी कल्याण भी है।।
स्वार्थ के चक्कर रहे फिर,
तुम सदा असमान में हो।
समझकर कि मैं बड़ा हूँ,
रहे भी इस मान में हो।।
पर न चाहा कि उठा लूँ जो कुचलता जा रहा है।
घट रहा है समय पल पल हाथ मलता जा रहा है
काल के मुख ओर भाई, कदम बढ़ता जा रहा है ।१।।

आज कितनी बढ़ रही हैं,
देश में ये कुप्रथायें।
और कितनी बढ़ रही हैं,
पथ में जिससे बढ़ न पायें।।
प्रेम का जहाँ प्रश्न है,
वह मौत का तूफान लाता।
माँगते हैं जब दहेजें
रह कहाँ ईमान जाता।।
बच्चियों का ब्याह भी, बहुमूल्य बनता जा रहा है।
घट रहा है समय पल पल, हाथ मलता जा रहा है।
काल के मुख ओर भाई कदम बढ़ता जा रहा है ।२।।

वृद्ध भी तो प्रेम का, आनंद लेने चल रहे हैं।
क्या हुआ वे वृद्ध हैं, पर मन तो उनके बढ़ रहे हैं।
मूँछ और सिर केश पर; करते हैं तनकर खिजाब।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस से बन जायें नये,
　　और रह जाये भी आव।।
फिर नया ही घर बसाने, नोट गिनता जा रहा है।
घट रहा है समय पल पल, हाथ मलता जा रहा है।
काल के मुख ओर भाई, कदम बढ़ता जा रहा है।।३।।

सुन रहा हूँ, देखता हूँ
　　आज रिश्वत बढ़ रही है।
देश की सर्वोन्नति के,
　　यही मग में अड़ रही है।।
योजनाओं की सफलता,
　　अगर हो तो हो भी कैसे।
कर्तव्य अपना छोड़कर
　　जब बन रहे हैं बड़े भैंसे ।।
देखकर यह कार्य मेरा, हृदय जलता जा रहा है।
घट रहा है समय पल पल हाथ मलता जा रहा है।
काल के मुख ओर भाई, कदम बढ़ता जा रहा है ।।४।।

नवयुवक तुम जाग जाओ,
　　अरु जगाओ देश को।
कुचल दो अन्याय को तुम,
　　कर हृदय आवेश हो ।।
सत् अहिंसा मार्ग बापू
　　का बता दो देश को।
करो वह कर्तव्य सब,
　　अन्याय का न लेश हो।।
बढ़ो आगे, अरु सम्हालो, दीप बुझने जा रहा है।
घट रहा है समय पल पल, हाथ मलता जा रहा है।
काल के मुख ओर भाई, कदम बढ़ता जा रहा है ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचायत (रामराज्य)

बापू का वह स्वप्न,
राम का राज्य,
बनेगा आज?
इसी पंचायत से ?
क्या यह सही ?
मुझे तो नहीं
तनिक विश्वास
न कुछ भी आश
देखता पास
मलिन मुख त्रास
तो भर जाता है
दुःख से हृदय
और वाणी करती चीत्कार

ओ पंचो ! कैसे पंच बने
यही कर्तव्य तुम्हारे हैं ?
दिनों दिन झगड़े बढ़ते चले
न्याय भी करते न्यारे हैं।

दीनों की करुण पुकार
न सुनते अब।
गाँव के छोटे मोटे काम
न करते अब
क्योंकि मौखिक तो
कुछ भी नहीं
लिखित यदि आता भी
तो पक्षपात करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही हैं पंच गाँव के
स्वार्थ भावना युक्त
इन्हीं से चाह रहे क्या आप
गाँव का हो सकता उद्धार
और बापू का वह स्वप्न
राम का राज्य,
इसी पंचायत से
हो सकता साकार ?

ओ गाँवों के लोग
भोले भाले
सीधे साधे रहने वाले
आडम्बर से दूर
कहाने वाले
क्यों बदनामी
करवाते हो आज ?
कहाँ से आया यह
अन्याय और छल क्षुद्र
झूठ के काम कि जिससे होते हो बदनाम
छोड़ दो, शीघ्र छोड़ दो
गाँजा और अफीम
भाँग का नशा छोड़ दो
और शराबी बनने के
साधन भी तोड़ दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो उन कृश गायों को
जिनके पल से पल लगे जाते हैं।
जर्जर है तन
चलने में, घुटने छुल जाते हैं।
खाने लगीं क्या आज
देखते सभी
मगर कहने में आती लाज
क्योंकि ए गौ माता हैं।

फिर, क्यों ऐसी दशा
सुधारो, शीघ्र सुधारो
सेवा का वह भाव
पुनः निज उर में धारो
सरल सत्य हो कर्म
सत्य जीवन में ढारो
घी दूधों को नदी
बहा दो पुनः बहा दो।
तभी हो सकता है उद्धार
तुम्हारा,
और तुम्हारे गाँव
देश का
और बापू का वह स्वप्न
राम का राज्य
तभी हो सकता है साकार
तुम्हारी सतत लगन से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवि की अभिलाषा

सूर्य चन्द्र यदि बन न सकूँ, तो दीपक ही बन जाऊँ।
स्वयं जलूँ अरु मिलने वालों को भी गले लगाऊँ।।

महावीर से वीर कि जिनने पर्वत हाथ उठाया।
अर्जुन से गम्भीर कि जिसने सर से नीर बहाया।
कृष्ण चन्द्र से बली कि जिसने कंसहु मान घटाया।
राणा शिवा लक्ष्मी रानी ने भी नाम कमाया।
उन वीरों सा बन न सकूँ तो, उनकी रज को पाऊँ।
सूर्य चन्द्र यदि बन न सकूँ, तो दीपक ही बन जाऊँ।

हिन्दी के साहित्य गगन में सूर्य, सूर चन्द्र तुलसी।
गरिमा लिए सुशोभित होते बहु कवि कलि मंजुल सी।
आज हुए हैं बड़े बड़े कवि गैस और बिजली से।
लालटेन भी बने अनेकों रोड ज्योति जलती से।
चाह क्या है बतलाओ, मैं बतलाऊँ क्या चाहूँ?
घर में ज्योति जगाने को, इक दीपक ही बन जाऊँ।
स्वयं जलूँ अरु चलने वालों को भी मार्ग दिखाऊँ।
सूर्य चन्द्र यदि बन न सकूँ तो जुगनू न रह जाऊँ।
सूर्य चन्द्र यदि बन न सकूँ तो दीपक ही बन जाऊँ।
स्वयं जलूँ अरु मिलने वालों को भी गले लगाऊँ।

जन्मभूमि वन्दना

पूरब में रैव तक है, पश्चिम में प्रेम सागर।
गिरि कन्दरा के अन्दर, शिवधाम है उजागर।।
अतिशय सहित जिनालय, नगरी मबई सुहावन।
है बार-बार वन्दन, मम जन्मभूमि पावन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीते अब तक सत्तर वसन्त

बीते अब तक सत्तर वसन्त।
जीवन का आया समय अन्त।

केवल वसन्त ही नहीं किंतु,
पतझड़ की भी देखी वयार।
ग्रीषम की लपटें भी झेली,
वर्षा की मधुरम मृदु फुहार।
सर्दी की ठिठुरन भी जानी,
हेमन्त गिरे ओले अपार।
षट् ऋतु का परिवर्तन देखा,
उनका भी होता रहा अन्त।
बीते अब तक सत्तर वसन्त।।

बचपन बीता हँसते हँसते,
यौवन में मद मस्ती छाई।
आ गया बुढ़ापा दाँत हिले,
बालों में रंग बदली आई।
आँखों पर ऐनक चढ़ी और
काया में कमजोरी आई।
अभिलाषा मेरी हो समाधि,
चरणों में रहकर महासंत।
बीते अब तक सत्तर वसन्त।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिपिक (क्लर्क)

मत सुमरो किसी देवता को,
बस जाके माथ नवा लो तुम।
उस लिपिक लेखनी में बल है,
बस उसको नाथ बना लो तुम।।

मत जाना कहीं सिफारिस ले,
अफसर के घर या आसपास।
बनता भी होगा काम यदि,
तो हो जायेगा सर्वनाश।।

क्योंकि क्लर्क की जेब नहीं,
जब तक न रजत से पूर्ण भरी।
क्या रक्त धार मिट जायेगी,
जब चली लेखनी खरी-खरी।।

उसके दिमाग में टेढ़े हैं,
आँखों में भारी खुरापात।
लेखनी मचलकर चलती है
डगभर चलकर फिर मचल जात।।

कानून नये तत्क्षण बनते,
जिसकी पोथी रहती दिमाग।
है लिखित नियम का काम नहीं,
बिन लिखे लगाता वारि-आग।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अफसर की तीक्ष्ण तीव्र बुद्धि,
उसके आगे थोथी बनती।
फिर लिपिक महोदय जी की ही,
उल्टी-सीधी सब कुछ चलती ।।

अब तुम्हें बताऊँ क्या भाई,
यदि कुछ भी कार्य कराना हो।
तो बाबूजी के घर जाकर,
जेब गर्म कर आना हो।।

साहब से बड़ा है, साहब वह,
भगवान से बड़ा देवता वह,
मानव से बड़ा जानवर वह
कोई कर न सके, कर देता वह।

इसलिए कह रहा हूँ भाई ....
मत सुमरो किसी देवता को,
बस जाके माथ नवा लो तुम।
उस लिपिक लेखनी में बल है,
बस उसको नाथ बना लो तुम।।

उद्‍बोधन :

"क्या ठीक यही है? कि रिश्वत लेना पाप नहीं?
और क्या देने में भी होता है संताप नहीं?
अरे बन्धुओं, अपने कर्त्तव्यों को जरा विचारो।
बन जाओ मानव, मानव हो, हम दीनों को मत मारो
पाप-पुण्य जाते जीवन संग, वेद पुराण सिखात।
चार दिनों की चाँदनी, फिर अंधेरी रात।।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुंदेली शिक्षा गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़ लो

पढ़ लो पढ़ लो सभी नर-नार, अपढ़ कोउ न कहवे।
खुल गए पुरवन मदरसा यार, निरक्षर कोउ न कहवे।।

चार माह में खेती होती,
फल फूलन को बढ़वो।
मन लगाव तो कठिन कछू ना,
रामायण को पढ़वो। पढ लो ....।।
भैंसें गैयाँ जाव चराबे,
ले लो खरिया मिट्टी।
चार चार अक्षर के सीखत,
लिखन लगोगे चिट्ठी। पढ़ लो...................।।
मैं मैं करती कहती बकरी,
मैं भी साथ पढूँगी।
गल-गल मिट्ठू मैना कहती,
मैं ना पीछे रहूँगी। पढ़ लो ....।।
औपचारिकेत्तर शिक्षा से,
भूले बिगरे सुधरे।
नई रोशनी उन्हें मिली है,
ज्ञान बीज उर उगरे। पढ़ लो ....।।
प्रौढ़ पाठशालाएँ खुल गईं,
दिन अरु रात पढ़ावत।
जब जी को मन लगे तभी वे
घर-घर जा समझावत। पढ़ लो...................।।
लरका बिटियाँ बाप-मताई,
पढ़वें ओलम गिनती।
घर में कोउ निरक्षर न रहे,
यह 'सुधेश' की विनती ।। पढ़ लो ....।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्री-शिक्षा

अपनी लली पढ़ा लो री।
जी की कली खिला लो री।।
पढ़ी लिखी जो होती बेन,
उनके रहें सदा सुख चैन।
रामायण को पाठ करें नित
प्रभु के भजन गवा लो री।
जी की कली खिला लो री। अपनी लली ....।।
जो तिरियाँ होती अज्ञान,
पंडित मूरख एक समान।
आदर मान जानती बे ना,
उनसे तो लरवा लो री।
जी की कली खिला लो री। अपनी लली............।।
पारवती, सावित्री-सीता,
नचतीं गाती राधा-गीता।
मात शारदा बीन बजाती,
इनके संग लगा लो री।
जी की कली खिला लो री। अपनी लली .....।।
पढ़ना-लिखना खाना-पीना,
स्वेटर बुनना कपड़े सीना।
नई कलाएँ कई भाँति की,
बिटियन को सिखला लो री।
जी की कली खिला लो री। अपनी लली............।।
पढ़ लिखकर सब करवें काम,
देश की उन्नति, जग में नाम,
कहत 'सुधेश' पढ़ाकर बेटी,
उन्नति शिखर चढ़ा लो री ।
जी की कली खिला लो री। अपनी लली ....।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रौढ़-शिक्षा

आओ-आओ रे निरक्षर लोग,
प्रौढ़ शिक्षालय में।
गाओ गाओ रे, लगाओ भोग,
आज विद्यालय में।
लाख चौरासी योनि भटकत,
यह नर तन है पायो।
ज्ञान बिना पशु ही कहलाये,
मूरख जन्म गमायो। आओ ....॥
बाल्मीकि जी दस्यूराज थे,
अपनी भरी जवानी।
ज्ञान मिला रामायण लिख दी,
हो गई अमर कहानी।। आओ..................॥
तुलसी-सूर-कबीरदास जी,
इत उत यों ही डोले।
नरहरि-बल्लभ-रामानान्द मिल
गुरु ज्ञान पट खोले । आओ ....॥
सरिता ने अपने पथ बढ़कर,
लखी सिन्धु गहराई।
मानव ने चन्दा पर चढ़कर,
नापी है ऊँचाई ।। आओ.......................॥
बिन्दु बिन्दु से सिन्धु भरत है,
कन कन से धन भारी।
कहत 'सुधेश' प्रौढ़ शिक्षा से,
सुधरे मती तुम्हारी।। आओ....................॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महिला-शिक्षा

सब कोउ कहत सुनो सइयाँ।
गुरु बिन ज्ञान मिलत नइयाँ।।

नहीं मायके में स्कूल,
मोरी ई में का रइ भूल।
खेलत कूँदत सब दिन कढ़ गये,
फिरती रही, चराउत गइयाँ।
गुरु बिन ज्ञान मिलत नइयाँ।। सब कोउ ....।।
जब से मैं इस घर में आई,
दिन के रोटी राते ब्यारी।
चक्की-पानी झारा-फूँकी।
फुरसत तनक मिलत नइयाँ।
गुरू बिन ज्ञान मिलत नइयाँ। सब कोउ ....।।
मोरी अब देवरानी आई,
पढ़ी लिखी सब करें बढ़ाई।
बिना पढ़ी अब मैं ना रहों,
देव पढ़ाय परों पइयाँ।
गुरू बिन ज्ञान मिलत नइयाँ। सब कोउ ....।।
देखो शोभा की भौजाई,
अफसर बनी कार में जाई।
पढे लिखे के बड़े ठाट हैं,
देख छिपाय अपन मुइयाँ।
गुरू बिन ज्ञान मिलत नइयाँ। सब कोउ.............।।
महिला शिक्षा केन्द्र खुल गए,
सिलवो, बुनबो सवै चल गए।
कवि 'सुधेश' तिय 'केशर' कहती।
पढ़ो-लिखो इनमें गुइयाँ।
गुरू बिन ज्ञान मिलत नइयाँ। सब कोउ....................।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या करें, क्या न करें?
(अन्त से तीसरा अक्षर हिंदी वर्णमाला)

जन्म लिया भू-तल पर **आ**कर।
प्रश्न उठा तब ना कर **का** कर।।
यात्रा करो सदा ही **खा** कर।
भजन करो प्रभु के गुण **गा** कर।
मीठा मत खा कभी अ**घा**कर।।

वह परतंत्र जो है पर **चा**कर।
बेल फला करती है **छा**कर।
तीर्थ यात्रा करिये **जा**कर।
नींद लीजिये आग बु**झा**कर।।

सहोदरों को नहीं क**टा**कर।
पर की निंदा मतकर **ठा**कर।
सहन करो दु:ख मन ठं**डा**कर।
भला नहीं तरूवर को **ढा**कर।
दान धर्म में नहीं गु**णा**कर।।

बच्चों के संग खेलो **ता**कर।
मोती चुनो सिन्धु की **था**कर।
ऋण को अति ही शीघ्र अ**दा**कर।
गुरू के चरण नमन कर **धा**कर।
बुरे काम को सदा म**ना**कर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गर्व नहीं कर धन को पाकर।
क्रय विक्रय में सदा बफाकर।
रोगी जन की सदा दबाकर
गुण विकसित ज्यों उदित प्रभाकर।
दान दीजिए स्वयं कमाकर।।

प्रात: उठ प्रभु नाम लियाकर।
पापों से तूँ सदा डराकर।
हँस मत तूँ औरों को रुलाकर।
ज्ञान लीजिए शीश नवाकर।

सुख चाहो तो नहीं नशाकर।
सोना क्रयकर सदा कषाकर।
सत संगति में सदा बसाकर।
सत्य वचन तूँ सदा कहाकर।

सब जीवों की तूँ रक्षाकर।
पद पवित्र तीरथ यात्राकर।
कहत 'सुधेश' मुझे आज्ञाकर।
जीवन सफल बने करुणाकर।।

卐

5346

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

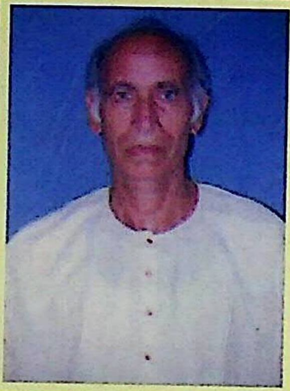

श्री बाबूलाल जैन 'सुधेश' का जन्म टीकमगढ़ जिले के म[illegible]ई ग्राम में दिनांक २८ जून १९३४ (ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा सं. १९९१) को हुआ था। आपने लगभग चालीस वर्ष तक टीकमगढ़ जिले के विभिन्न अंचलों में शिक्षण कार्य किया है। इसके साथ ही आप साहित्य रचनाधर्मिता से भी जुड़े रहे हैं।

आपके द्वारा लिखित लेख "अतीत का गौरव : अहार जी" और "जैत. माता : एक अन्वेषण" आदि प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इसके अलावा आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती रही हैं।

आप शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिगौड़ा से जुलाई १९९३ में सेवानिवृत्त होने के बाद वर्तमान में सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

वर्तमान सम्पर्क सूत्र

"अहिंसा भवन"

ग्राम व पोस्ट : दिगौड़ा, जिला : टीकमगढ़ (म.प्र.)

फोन : ०७६८१-२६४३८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi